भीष्म साहनी के 'भाग्य-रेखा' कहानी संग्रह में चित्रित मानवीय मूल्य

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

महिमा उमेश कांबळी

अनुक्रमांक: 22P0140015

PR Number: 201802543

मार्गदर्शक

मनिषा गावडे

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक:

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, 'भीष्म साहनी के 'भाग्य-रेखा' कहानी संग्रह में चित्रित मानवीय मूल्य' is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Ms. Manisha Gaude and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Mahima Umesh Kambli

22P0140015

Date: 22/04/2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report 'भीष्म साहनी के 'भाग्य-रेखा' कहानी संग्रह में चित्रित मानवीय मूल्य' is a bonafide work carried out by Ms. Mahima Umesh Kambli under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Manisha Gaude

Date: 22/04/2024

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, Goa University

School Stamp

Date: 22/04/2024

Place: Goa University

AATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय - ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

Goa University
Taleigao Plateau, Goa 403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/263

Date: 09/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Mahima Umesh Kambli a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 40 Hours & 03 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Manisha Gaude.

9/5/24

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	ii, iii
	अनुक्रम	iv, v, vi, vii
	प्रस्तावना	Viii, ix, x, xi
1	**मानवीय मूल्यः अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप** **1.1) मूल्यः अर्थ एवं परिभाषाएँ** 1.1.1) मूल्य की परिभाषाएं **1.2) मानवीय मूल्यः अर्थ, परिभाषा, महत्व एवं प्रकार** 1.2.1) मानवीय मूल्यः अर्थ एवं परिभाषाएं 1.2.2) मानवीय मूल्यः महत्त्व 1.2.3) विविध मानवीय मूल्यों पर विचार	**1 - 20**
2	**भीष्म साहनीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व** **2.1) व्यक्तित्व** 2.1.1) जन्म और बचपन	

	2.1.2) स्वभाव	
	2.1.3) परिवार	
	2.1.4) शिक्षा एवं नौकरी	
	2.1.5) विवाह	
	2.1.6) पुरस्कार	
	2.1.7) मृत्यु	
	2.2) कृतित्व	**21 - 48**
	2.2.1) उपन्यास	
	2.2.2) कहानी	
	2.2.3) नाटक	
	2.2.4) निबंध	
	2.2.5) बाल साहित्य	
3	**भीष्म साहनी के** 'भाग्य-रेखा' कहानी संग्रह **में चित्रित मानवीय मूल्य**	
	3.1)अहिंसा	
	3.1.1) जोत	
	3.1.2) खून के छींटे	
	3.1.3) मुर्गी की कीमत	
	3.2) निस्वार्थ, सेवा भाव	

	3.2.1) अशांत रूहें **3.3) सत्यनिष्ठा, संयम एवं ईमानदारी** 3.3.1) गंगो का जाया 3.3.2) शिष्टाचार **3.4) निडरता** 3.4.1) अनोखी हड्डी **3.5) प्रेम एवं मानवता** 3.5.1) तमगे 3.5.2) घर-बेघर **3.6) दृढ़ता** 3.6.1) क्रिकेट मैच 3.6.2) भाग्य-रेखा **3.7) धैर्य** 3.7.1) घर की इज्जत 3.7.2) ऊब 3.7.3) नीली आँखे	**49 - 85**
4	**भाषा-शैली** 4.1) भीष्म साहनी की पात्रानुकूल और सहज-सरल भाषा	

	4.2) भीष्म साहनी की कहानियों में विभिन्न भाषाओं का समावेश 4.3) भीष्म साहनी की कहानियों में निहित शैलियाँ	86 - 102
	उपसंहार **आधार ग्रंथ एवं सहायक ग्रंथ सूंचि**	103 -107 108 - 116

प्रस्तावना

प्रगतिवादी रचनाकारों में प्रेमचन्द, यशपाल, रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यायन आदि रचनाकारों के नाम लिए जाते हैं। इसमें से एक बहुचर्चित नाम भीष्म साहनी का लिया जाता है। वे प्रगतिशील लेखक संघ के उप सचिव भी रहे हैं। भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के जाने-माने रचनाकार हैं, जिनके साहित्य में समाज का यथार्थ शामिल होने के कारण वह उनके रचनाओं को और उत्कृष्ट बनाता है। उन्होंने कई उपन्यास, कहानी संग्रह, बाल साहित्य, नाटक, जीवनी, निबंध आदि की रचना की हैं। 'मानवीय मूल्य' भीष्म साहनी के कहानियों का केंद्रीय विषय रहा है। वह प्रतिष्ठित रचनाकार, अनुवादक, संपादक होने के साथ ही एक सफल रंगमंचीय कलाकार भी रहे। उन्होंने आजादी के पूर्व और विभाजन के बाद के समय को बड़ी नजदीक से अनुभव किया है जिस कारण उनकी ज्यादातर रचनाओं में उस समय की किसी न किसी रूप में झलक देखने मिल जाती है। भीष्म साहनी के कहानियों का समाज, मूल्यों से जुड़ाव और मेरी इस विषय में रुचि के चलते, मुझे भीष्म साहनी की कहानियों पर शोध कार्य करने का बढ़ावा मिला। 'भीष्म साहनी के 'भाग्य-रेखा' कहानी संग्रह में चित्रित मानवीय मूल्य' इस शोध प्रबंध के विषय के अंतर्गत आधुनिक समय के मानवीय मूल्यों के कारण उत्पन्न समस्याओं को दर्शाया गया। उसी के साथ मानवीय मूल्यों का महत्व, भीष्म साहनी के रचनात्मक वेशेषताओं को जानने की कोशिश इस शोध प्रबंध द्वारा की गई है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय 'मानवीय मूल्यः अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप' में सैध्यांतिक विवेचन है। इस विषय के अंतर्गत मूल्य के अर्थ एवं परिभाषाओं का अध्ययन किया है। मानवीय मूल्य की अवधारणा को समझने के लिएउसके अर्थ, परिभाषाओं एवं स्वरूप का अध्ययन किया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत भीष्म साहनी के व्यक्तित्व और कृतित्व को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। जिसमें उनका जन्म, बचपन, उनके माता-पिता, विवाह, स्वभाव, नौकरी, शिक्षा, रचनाओं की जानकारी प्रमाण के साथ प्रस्तुत की गई है। ताकि भीष्म साहनी के समय एवं परिस्थितियों से अवगत हो सकूं। भीष्म साहनी के जन्म के समय भारत अंग्रेजों की गुलामी तले जी रहा था। उसी माहौल में उनका बचपन बीता और आज़ादी की जंग एवं विभाजन की त्रासदी को उन्होंने करीब से देखी है। अपने इन्हीं जीवनानुभवों को अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया। भीष्म साहनी में वह सहनशीलता भरी है, जिस वजह से वह एक ही कहानी या फिर कोई साहित्य लिखकर उसे बार- बार पढ़ कर ठीक करते रहते थे, जब तक कि वह उससे संतुष्ट न हो जाए। भीष्म साहनी का पहला कहानी संग्रह 'भाग्य रेखा' में कई कहानियां संकलित है, जैसे 'नीली आंखें', 'क्रिकेट मैच', 'तमगे', 'घर-बेघर', 'खून के छुटे', 'शिष्टाचार', 'गंगो का जाया', 'अशांत रुहे' आदि।

'भीष्म साहनी के 'भाग्य-रेखा' कहानियों में चित्रित मानवीय मूल्य' नामक तृतीय अध्याय में मानवीय मूल्यों के संदर्भ में भीष्म साहनी के भाग्य-रेखा कहाँनी संग्रह की 'भाग्य-रेखा', 'तमगे', 'मुर्गी की कीमत' जैसी कहानियों का अध्ययन किया है।

विविध मानवीय मूल्यों, अवमूल्यों से उत्पन्न स्थितियों का अध्ययन इस कार्य का उद्देश्य रहा है। अतः मूल्यों के विघटन का समाज पर पड़ते प्रभाव का विश्लेषण किया है।

चतुर्थ अध्याय 'भाषा शैली' के अंतर्गत भीष्म साहनी की कथा भाषा पर अध्ययन किया गया है। भीष्म साहनी कई भाषाओं के जानकार थे। जिस कारण उनके कहानियों की भाषा सरल-सहज, व्यंग्यात्मक, वर्णनात्मक, संवादात्मक, विवरणात्मक, नाटक आदि भाषा शैलियों से भरी हुई है। जिसमें अनेक उर्दु, फारसी, अंग्रेजी, तत्सम, तत्द्भव, अरबी आदि भाषाओं के शब्द निहित हैं। उनकी कहानी पाठक के मन में घर कर जाती है। जिनमें वास्तविकता के साथ काल्पनिकता भी निहित है। जो मूल्य को लेकर पाठक को एक अच्छा संदेश देने का काम करती है और अंत में उपसंहार लिखा गया। भविष्य में अगर और कोई भीष्म साहनी पर काम करना चाहता हो तो, वह उनके साहित्य के अनेक विषयों पर काम कर सकता है, जैसे:- सांप्रदायिकता, न्याय व्यवस्था, मानवीय संबंध, व्यवसायिकता, धार्मिक पाखंड, मध्यवर्गीय जीवन, मानवीय संवेदना, वर्णभेद, सामंतवाद, पूँजीवाद, वृध्द विमर्श आदि।

मैं मेरे शोध मार्गदर्शक मनिषा गावडे, हिंदी अध्ययन शाखा, शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला, गोवा विश्वविद्यालय जिनके प्रेरणा एवं मार्गदर्शन के कारण यह कठिन शोध प्रबंध सफलतापूर्वक पूर्ण होना संभव हो सका। मैं गोवा विश्वविद्यालय और कृष्णदास शामा गोवा स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी, पणजी के ग्रंथ

पालिका एवं उनके सहयोगियों का कृतज्ञता पूर्वक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके मदद और सहयोग के वजह से ही यह शोध पूर्ण हो पाया है। हिंदी विभाग के अध्ययन शाखा के सभी प्राध्यापकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरी सहायता की है। मैं मेरे पिता श्री. ऊमेश गोविंद कांबळी जी, माता श्रीमती. निर्मल ऊमेश कांबळी जी जिनके आशीर्वाद और निस्वार्थ सहायता से ही यह शोध कार्य संपन्न हो पाया है। जिन्होंने हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाने में सहायता की हैं। उन समीक्षकों और लेखकों की भी मैं आभारी हूँ जिनकी कृतियों की सहायता मुझे प्राप्त हो पाई। मैं वरिष्ठ लेखक धर्मवीर भारती, राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर, भीष्म साहनी, हरीयश राय इन लेखकों की लेखनी को भी नमन करना चाहती हूँ जिनके विचार इस शोध प्रबंध में शामिल हैं।

प्रथम अध्याय: मानवीय मूल्य: अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.1) मूल्य: अर्थ एवं परिभाषाएँ

मूल्य कहने पर उसका संबंध मनुष्य के आंतरिक गुणों, उसके संस्कारों से जुड़ जाता है। मूल्य अर्थात अच्छा बर्ताव। उसी से मनुष्य का अस्तित्व है। एक अच्छा एवं नैतिक व्यवहार धारण कर मनुष्य अपना विकास सही ढंग से कर पाता है। यह व्यक्ति के वह गुण है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने लक्ष्यों, इच्छाओं को पूर्ण करता है। मूल्य के अनेक अर्थ बताएं गए है जैसे:-वस्तु का दाम, भाव, किसी वस्तु की उपयुक्तता को दर्शाना आदि। मूल्य वह है जिनका मनुष्य अपने जीवन में पालन करना चाहे, जिनके अनुसार चलना चाहे, जिन्हें महत्व दे, जिन्हें अनिवार्य समझे।

पूरे संसार में मनुष्य को ही मूल्यों का निर्माण कर्ता माना गया है, क्योंकि उसी ने अपनी सुविधा के अनुसार, अपने हिसाब से अपने अंदर के भावों का चयन किया है। समाज में स्थित कानून भी उसी ने अपनी सुविधा के अनुसार बनाए है, ताकि वह लोगों को अपने मूल्यों से भटकने से रोक पाए मूल्य और उसी के साथ मनुष्य अपना एक बेहतर व्यक्तित्व निर्माण कर पाए। मूल्य सिर्फ मनुष्य में पाए जाते हैं, जानवर में नहीं

क्योंकि जानवर मूल्य के हिसाब से नहीं, तो परिस्थिति के हिसाब से अपना बर्ताव बनाए रखते हैं। उन पर ना तो कोई भाषा लागू होती है और ना ही कोई संस्कृति। भाषा और संस्कृति मनुष्य को पारंपरिक तौर पर उनके पुरखों से प्राप्त होती है। जीने भूलाकर वह नए संस्कारों का निर्माण करने की कोशिश कर रहा है। एक व्यक्ति को मनुष्य की तरह बर्ताव करना महत्वपूर्ण है। समाज में मनुष्य अपने संस्कारों से पहचाना जाता है। नैतिकता पूर्ण व्यक्ति को समाज आसानी से स्वीकार नहीं करता बल्कि उस चिज को लेकर समाज द्वारा ही उसका मजाक उडाया जाता हैं। बिना उस व्यक्ति के भावनाओं की कद्र कीए।

मूल्य के कोशगत अर्थ निम्नलिखित है-

समांतर कोश में मूल्य का अर्थ है: - "अर्घ, अर्थ, अर्ह, कद्र, क़ीमत, दर, दाम, निर्ख, प्राइस, भाव, मालिया, मुआवज़ा, मोल, लागत, शरह, शुल्क। 6

मूल्य -" किसी पण्य (वस्तु या सेवा) की बुनियादी कीमत या दाम को मूल्य की संज्ञा दी जाती है। किसी भी वस्तु या सेवा की एक निश्चित उपयोगिता होती है जिसके आधार पर उपयोग- मूल्य निर्धारित होता है जिसकी प्रकृति अपेक्षाकृत स्थाई समझी जाती है।" [7]

वर्धा हिंदी शब्दकोश में मूल्य का अर्थ है: - "दाम; कीमत; भाव; महत्व; मानवीय आदर्श।"[8]

1.1.1) मूल्य की परिभाषाएं

मूल्य की परिभाषा निम्नलिखित है:-

धर्मवीर भारती के अनुसार:- "साहित्य मनुष्य का ही कृतित्व है और मानवीय चेतना के बहूविध प्रत्यन्तरों में से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रत्युतर है। इसलिए हम आधुनिक साहित्य के बहुत-से पक्षों को या आयामों को केवल तभी बहुत अच्छी तरह समझ सकते हैं जब हम उन्हें मानव मूल्यों के इस व्यापक संकट के संदर्भ में देखने की चेष्टा करें।"[1]

सुरेश चन्द्र के अनुसारः**-** "हिन्दी भाषा का 'मूल्य' शब्द संस्कृत की 'मूल्' धातु में 'यत्' प्रत्यय के योग से बना है। यह शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Value' शब्द का हिन्दी पर्याय है। 'Value'लैटिन भाषा के 'Valare' शब्द से बना है। 'Valare' का अर्थ होता है- 'अच्छा', 'सुन्दर'। अच्छाई और सुन्दरता दो ऐसे गुण हैं जिनके आधार पर ही कोई वस्तु मनुष्य के लिए इष्ट बनती है और उसे प्राप्त करने के लिए वह अपेक्षित मुद्रादि चुकाता है।"[2]

प्रो.अगम प्रसाद माथुर के अनुसार:- "मूल्य पुस्तकीय ज्ञान से अर्जित नहीं होते। मनुष्य सतत रूप से चली आने वाले अपनी सांस्कृतिक यात्रा में निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। कभी उसके पैर डगमगाते हैं, तो वह सँभल भी जाता है। इस अजेय सांस्कृतिक यात्रा में वह जो अनुभव करता है, चिन्तन करता है, परंपरा से शिक्षा ग्रहण करता है, उसी का घनीभूत रूप है- मूल्य।" [3]

डॉ. जूही शुक्ला के अनुसार :- "जीवन को जीने के लिए जीवन मूल्यों की आवश्यकता होती है। बिना इन मूल्यों के जीवन निरर्थक है।"[4]

डॉ. विनीता राय के अनुसार:- "मूल्य मानव जीवन के साधन और साध्य दोनों हैं। जिसे लेकर हम जीते हैं अथवा जिसके लिए हम जीते हैं वे सब हमारे जीवन मूल्य हैं।"[5]

मनुष्य द्वारा लिखित साहित्य, मानव चेतना निर्माण कर्ता का ही एक रूप है। आधुनिक लिखित साहित्य के विभिन्न मुद्दों की समझ हममें तभी उत्पन्न होगी जब हम उसे मानवीय मूल्य के विघटन कि समस्या से जोडेंगे। साहित्य को उस नजरिए से देखने की कोशिश करेंगे। आजकल लेखकों ने मानवीय मूल्य को भी अपना एक साहित्यिक विषय बना रखा है। ताकि वह मनुष्य में वह खोई मनुष्यता फिर से जागृत कर पाए।

मूल्य इस शब्द का अर्थ है, अच्छा या मूल्यवान। जिसको पाने के लिए मनुष्य कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार हो जाता है। इतने मूल्यवान है यह मूल्य। जिन्हें खरीदा नहीं जा सकता लेकिन इच्छा कर उन्हें आत्मसात किया जा सकता हैं।

मूल्यों को पुस्तकी ज्ञान सें प्राप्त नहीं किया जा सकता। क्योंकि मूल्य मनुष्य के आंतरिक गुण होते है, जिन्हें आप जबरदस्ती किसी के अंदर स्थापित नहीं करवा सकते। वह तो सिर्फ समाज और अपने आस-पास के अवलोकन सें संभव है। जो वह अपने बुध्दि के हिसाब से करता है।

1.2) मानवीय मूल्य: अर्थ, परिभाषा, महत्व एवं प्रकार

1.2.1) मानवीय मूल्य: - अर्थ एवं परिभाषाएं

मूल्य के द्वारा ही दूसरे व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित किया जाता है। अहिंसा, करुणा, प्रेम, ईमानदारी, दूसरों की मदद करना, एकता, आदर, संयम आदि मानवीय मूल्य के कुछ उदाहरण है। मनुष्य के जीवन में मानवीय मूल्य बहुत बड़ा महत्व रखते हैं, खासकर के सामाजिक जीवन में।

मानवीय मूल्य का कोशगत अर्थ कुछ इस प्रकार से बताया गया है कि-

शंभुनाथ द्वारा लिखित हिंदी साहित्य ज्ञानकोष में मानवीय मूल्य का अर्थ इस प्रकार दिया गया है कि, "मानवीय मूल्य का तात्पर्य उन लक्षों, अपेक्षाओं से है जिनके प्रती मानव समाज में प्रेम और आदर है। कह सकते है कि पशु समाज और मानव समाज में फर्क ही यह है कि पशुओं के जीवन में मूल्य नहीं होते। उनका व्यवहार उनकी तात्कालिन आवश्यकताओं से निर्धारीत होता है जबकि मनुष्य के सामने कुछ आदर्श होते हैं जिनका वह पालन करता है अथवा पालन करना चाहता है। मूल्य वह है जो किसी चीज को मूल्यवान बनाता है। सरल शब्दों मे कहा जाएं तो व्यक्तियों और समाज को किस तरह आचरण करना चाहिए मूल्य हि यह निर्देशित करता है। मूल्य का एक रूप वांछित के अनुसार करना हुआ तो, दुसरा रूप अवांछित से बचने या उसका तिरस्कार करना है।"[14]

- आधुनिक हिंदी शब्दकोश में मानवीय का अर्थ है: -" (मानव+छ) मानव संम्बन्धी, मानव का, मनुष्योचीत, सहृदयता, दयालुता आदि मानव- गुणों से युक्त।" [15]

परिभाषाएं निम्नलिखित है:-

"मूल्य यानि ऐसे मानदंड, जो व्यक्ति का मार्गदर्शन कर उसके सामाजिक व्यवहार को सुलभ बनाने में मदद करते हैं, जो व्यक्ति तथा समाज द्वारा स्थापित किए जाते हैं।"[9]

डॉ. लियाकत मियाभाई शेख के अनुसार:- "मानवीय मूल्य शाश्वत होते है। किंतु विशिष्ठ परिस्थितियों मे उसमें परिवर्तन की संभावना होती है। वास्तव में मानवीय मूल्य एक अवधारणा है जो आदर्श एवं् व्यावहारिक जीवन को सही दिशा दीखाते है।"[10]

प्रा. अशोक तायडे के अनुसार:- " मन का कोई भाव, विचार या व्यवहार पहले व्यक्ति या व्यक्ति समूह में जागृत होते हैं, उन्हें लागू किया जाता है और वे भाव, विचार या व्यवहार मानव समुदाय को आगे ले जाने या विकसित करने में सहायक रहे तो वे मानव मूल्य कहलाते है।"[11]

डॉ. प्रज्ञा अगरवाल के अनुसार:- मानव मूल्य " परिवर्तन करने में सहायक है, विचार विकसीत करते है, प्रेरणा स्तर में वृध्दि करते है आदि"[12]

मूल्यों को अपने अंदर बांध कर रखना ज्यादा जरुरी है। अपने मूल्यों द्वारा ही मनुष्य अपने रिश्तों को जीवित रख पाका है। मूल्य समाज द्वारा उत्पन्न किये जानेवाले वह गुण है, जो मनुष्य को एक अच्छा

इनसान बनाने में सहायक होते है। मानव के मूल्य कभी समाप्त नहीं हो सकते, बल्कि वह समय के साथ बदलते रहते है। उसीके साथ नए मूल्य भी जन्म लेते है। जिनका पालन नई पिढी द्वारा किया जाता हैं।

1.2.2) मानवीय मूल्यः महत्त्व

'मानवीय मूल्य के अंतर्गत किसी व्यक्ति की मान्यताएँ, उसका विश्वास, विचार, मन:स्थिति यह सब सम्मिलित किए जाते है। यह मूल्य यानी की व्यक्ति में छुपे वह गुण है जिन्हें वह अपने बडे-बुजुर्गों या अपने आस-पास के लोगों, माँ-बाप, संस्कृति से ग्रहण करता है। जिसका उपयोग वह अपने इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए, अपने धेय को पाने के उद्देश्य से करता है। मानवीय मूल्य भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग है।

एक तरफ मनुष्य अपने मानवीय मूल्यों को अपने अंदर काबु में रखता है तो दुसरी तरफ उसके द्वारा वह अपने परिवेश, संस्कृति को भी दर्शाता हैं। उदाहरण:- बस में अगर कोई बुढ़ी औरत खड़ी हो तो उसे खुदकी बैठने की जगह देना मानवीय मूल्य के अंतर्गत आता हैं। यह कर आप अपने करुणा के गुण को दर्शाते है। समाज में निहित समस्याओं, विसंगतियों को दूर करके लोगों के बीच एकता लाने में मनुष्य के मूल्य सहायता करते है। जिसमें मानव के हित को मुख्य रूप सें महत्व दिया

जाता है। अपने व्यवहार के चलते मानव का दूसरों के प्रति अपनापन निर्माण होता है, जिस अपनेपन से लोग आपस में भावनाओं के द्वारा जोडे जाते है। मूल्य मनुष्य का चरीत्र, उसका व्यवहार, निर्माण कर उसे विवेकशील, आदर्शवान बनाता तो है ही पर, उसी के साथ मानव में नैतिक गुणों को भी निर्मित करता है। मूल्य ही मनुष्य को व्यवहार करने का तरीका सिखाते है और प्रेरणा भी प्रदान करने है। मानवीय मूल्य कई तरह के होते है। पर आधुनीक समय में मूल्यों की स्थिति बिगड़ती नज़र आ रही है। पूराने मानव मूल्यों को लेकर, नए मानव मूल्यों की बात करते हुए धर्मवीर भारती कहते है कि, "पूराने मूल्य अब मिथ्या पड़ने लगे हैं। ऐसी श्रध्दा और आस्था जो हमें नरबलि तकके लिए विवश करे और वह करुणा जो दान-दया के द्वारा व्यक्त हो पर समाज के वैषम्य को विधिका विधान मानकर स्वीकार कर ले- इस प्रकार की श्रद्धा और करुणा अमानवीय वृत्तियों को जन्म देते हैं, वे मानवीय गौरव को प्रतिष्ठित करने के बजाय उसको विकलांग बनाते है।"[13] आज के समय में मूल्यों की परिभाषा ही बदल गई है। जहाँ मनुष्य में अमानवता के गुण जन्म ले रहे है। जिसका परिणाम स्वरूप आज अपहरण, बलात्कार, चोरी जैसी घटनाएं हो रही हैं।

-मनुष्य में स्थित मूल्य ही मानव को मानव बनाते हैं, क्योंकि बिना मूल्यों के मनुष्य प्राणी समान ही होता है। उसके अंदर के अवमूल्य गुण उसे बुरा इंसान बनाते हैं।

मूल्यों के कारण ही मनुष्य की पहचान बनती और बिगड़ती है। यानी उसमें निहित मूल्य तय करते हैं कि वह दूसरों के साथ किस तरह व्यवहार करेगा। मानव मूल्यों के चलते उसमें कई अच्छे गुणों का निर्माण संभव होता है जैसे:- दूसरे की मदद करना, शिष्टाचारी व्यवहार रखना, किसी बडे से आदर पूर्वक बात करना, दूसरों का आदर करना आदि। अगर व्यक्ति के मूल्य विघटीत हो जाए या फिर अगर वह अपने अच्छे गुणों से भटक जाए तो फिर वह दुसरे व्यक्ति के दु:ख का कारण बन बैठता है। मूल्यों के नाम पर ही वह अच्छे कर्मों का भागीदार बनता है। जो उसके द्वारा पुण्य या फिर पाप कमाने के जिम्मेदार बनते है। मानव के अंदर के मूल्य अगर विघटीत हो जाए तो संसार का नाश संभवत तय है।

1.2.3) विविध मानवीय मूल्यों पर विचार

मानव प्रकृति में निहित गुण दो तरह के होते हैं, मूल्य और अवमूल्य। मूल्य वह होते हैं जो मनुष्य के विकास में उसकी सहायता करने के साथ

ही उसे एक अच्छा इंसान बनने में मदद करते हैं। दूसरी ओर अवमूल्य है, जो व्यक्ति के अंदर छिपे एक जानवर के रूप को दर्शाते हैं। जो उसके अंदर छिपा होता है। यह उस व्यक्ति पर निर्भर होगा, कि उसे किन मूल्यों का चयन करना है। समाज में रह, उसका निरीक्षण करके मनुष्य में वह समज निर्माण होती है, कि कौन सा व्यवहार उसके लिए सही है और कौन-सा नहीं।

नैतिकता से रहने का मार्ग मनुष्य खुद चुनता है। नैतिक मूल्यों का पालन करने वाला व्यक्ति अच्छे भाव और गुणों से युक्त होता है। जैसे दूसरों की सहायता करना, दूसरों से प्रेम भाव, करुणा पूर्ण बर्ताव करना आदि मनुष्य अपने अंदर स्थित उस अच्छे व्यवहार को जीवित रखने हेतु इतिहास के महान पुरुषों द्‌वारा दिए गए जीवन जीने के सकारात्मक मार्गो का पालन करने का प्रयास करते हैं। समय और परिस्थिति के अनुकूल मूल्य बदलते हैं, फिर वह बदलाव सकारात्मक भी होगा और नकारात्मक भी। महात्मा गांधीजी जैसे महान व्यक्तित्व ने भी कई मूल्यों को बढ़ावा दिया, जैसे सत्य, प्रेम, अहिंसा, रामराज्य आदि। लेकिन इन्हीं महान व्यक्तियों के अनुपस्थिति के बाद लोगों के उन मूल्यों में विघटन दिखाई देने लगा।

लोक आदर्शवाद को भूलकर स्वार्थी बनने लगे। जिसका मूल कारण बदले समय के साथ लोगों ने अपनाई पाश्चात्य परंपरा हो सकती हैं। व्यक्ति के व्यवहार के अनुसार उसे पाप, पुण्य की प्राप्ति तो होती ही है पर उसी के साथ उसके बुरे गुणों की वजह से दूसरे मनुष्य को तकलीफ उठानी पड़ती है। मनुष्य को अगर सुख के साथ, बिना किसी दुख के अपना जीवन व्यतीत करना हो, तो उसे मूल्यों का पालन करना होगा। कुछ मानवीय मूल्य इस प्रकार से हैं-

1) संयम

संयम से तात्पर्य है धैर्य के साथ कोईकार्य करना। जो की मनुष्य के महत्वपूर्ण मूल्यों में से एक है। संयम के साथ कोई भी उचित कार्य सफलतापूर्वक किया जा सकता है। सानेगुरूजी संयम के बारे में यह कहते हैं कि, "मनुष्य के हाथों संयम के बगैर उत्कृष्ट कर्म नहीं होगा। संयम या धैर्य भारतीय संस्कृति की आत्मा है। कहना गलत नहीं होगा। भारतीय संस्कृति संयम पर टिकी है।"[16] अर्थात मनुष्य को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना आना चाहिए। तभी वह उचित तौर पर कोई कार्य सफलतापूर्वक कर पाएगा। संयम पर ही भारतीय संस्कृति निर्भर है। भारतीय संस्कृति के कई अंग है जैसे खान-पान, त्योहार आदि है। जिन्हें

धैर्य के साथ निभाया जाता है। संयम के जरिए किसी भी समस्या का निवारण आसानी से निकाला जा सकता है।

2) अहिंसा

अहिंसा यानी की हिंसा न करके, शांति और सुरक्षा के साथ अपना जीवन यापन करना । यह मनुष्य का सबसे उत्तम गुण है। जिसके द्वारा सत्य को प्रमाणित किया जाता है और अहिंसा के विपरीत है हिंसा जिससे मनुष्य को पीड़ा पहुंचती है। अपने किसी धेय को पूर्ण करने के लिए अहिंसा का मार्ग चुनना ही सही होता है। महात्मा गांधी अहिंसा के बारे में कहते हैं कि, "अहिंसा व्यक्तिगत धर्म नहीं है बल्कि व्यक्ति और समाज के लिए आध्यात्मिक एवं राजनीतिक आचरण का पथ मात्र है।"[17] अर्थात अहिंसा का मार्ग एक आपसी धर्म नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक और राजनीतिक व्यवहार रखने सिर्फ एक रास्ता है। महात्मा गांधी जी ने अहिंसा की बात की है क्योंकि, उन्होंने हिंसा को खुद झेला हैं। मनुष्य द्वार अहिंसा पूर्वक बर्ताव ही समाज की राह है। सानेगुरूजी अहिंसा के बारे में कहते हैं कि, "अहिंसा परमो धर्मः यह भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। यह सिध्दांत बालक को माँ के दूध से प्राप्त होता है।"[18] उनके अनुसार अहिंसा का मार्ग चुनकर, सुख के साथ खुद का

जीवन बिताना ही मनुष्य का कर्तव्य है। मनुष्य अहिंसा जैसे मूल्य, अपने अनुभवों से सीखता है।

जितेन्द्र यादव के अनुसार "हिंन्दू धर्म में ही वैष्णव पंथ अहिंसा पर बल देता है किन्तु मांसाहारीयों ने मांस खाने का रास्ता धर्म से ही निकाल लिया। अहिंसा एक व्यापक अवधारणा है। इसलिए इसे खाद्य पदार्थों तक सीमित करके देखना एकांकी दृष्टिकोण है। दंगा-फसाद, हत्या, बलात्कार जैसी घटनाओं से मनुष्यता ज्यादा खतरे में दिखाई पड़ती है। इसलिए अहिंसा को मनुष्य केन्द्रित बनाने की ज्यादा जरूरत है। "[19] अर्थात अहिंसा को बनाए रखना वर्तमान में थोड़ा मुश्किल बन चुका है। लेकिन उसे बनाए रखना आज ज्यादा जरूरी बन गया है। आज हिंसा का बोलबाला और अहिंसा खत्म होती जा रही है। ऐसा ही चलता रहा तो विश्व का नाश होने में देर नहीं लगेगी।

3) सत्य

सत्य का साथ देना ही पुण्य है। रामायण जैसे पौराणिक ग्रंथो में असत्य पर संत्य की विजय को दिखाकर इस बात को प्रमाणित किया गया है कि, सत्य का साथ देना ही एक उचित मार्ग कहलाता है। महात्मा बुध्द ने चार आर्य सत्यों के अंतर्गत आठ अष्टांगिक मार्ग बताएं है। "जैसे:-

सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी ,सम्यक् कर्म, सम्यक् जीविका, सम्यक् प्रयत्न, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि" के अंतर्गत वह स्पष्ट करते हैं कि, "असत्य भाषण, चुगली, गाली, वृथा, बकबक आदि असत् वाणी के कारण समाज का संगठन बिखर जाता है, और झगड़े खड़े होकर वे हिंसा का कारण बनते हैं। अतः सत्य, परस्पर सख्य साधने वाला, प्रिय एवं मित भाषण करना उचित है। इसी को सम्यक् वाचा कहते हैं और मनुष्य जाति की तीव्र तृष्णा का क्षय करने से सबको शान्ति मिलना सम्भव है और एक-दूसरे के साथ काया, वाचा, और मनसा सदाचार, सत्य, प्रेम तथा आस्था के साथ बर्ताव करना यह आर्य अष्टांगिक मार्ग उस का मार्ग है।"[20] अर्थात अगर संसार मे मनुष्य को शांति के साथ जीना हो, बिना झगडो, बहस के, निस्वार्थ होकर, तो उसे सम्यक् दृष्टि को अपनाना होगा। सत्य एवं प्रिय वाचा अपनाना ही मनुष्य की सम्यक् वाणी है। जिनका पालन कर मनुष्य अपना जीवन सुखमय बना सकता है। अपने भटके मूल्यों के बारे में अहसास कर सकारात्मक मूल्यों अपना सकता है।

4) ईमानदारी

इस तत्व के माध्यम से किसी के भी विश्वास को प्राप्त किया जा सकता है। ईमानदारी का मूल स्त्रोत विश्वास है। जिसके अंतर्गत ईमानदारी का भरोसा किसी को दिलाया जा सकता है। माता-पिता या शिक्षक द्वारा प्रमुख रूप से इस गुण का महत्व व्यक्ति को बताया जाता था। ईमानदारी के विपरीत बेईमानी है जिससे बना बनाया रिश्ता टूट जाता है और तो और जिससे सिर्फ समस्याओं का निर्माण होता है रिश्तों का नहीं।

5)प्रेम

प्रेम भरा जीवन जीना सुखमय होता है। प्रेम की वजह से कई रिश्ते बंधे हुए है। जैसे:- माँ-बेटी, मित्र- मित्र का आदि। प्रेम से ही संसार में सुख का शासन है। साने गुरूजी द्वारा लिखित प्रार्थना " खरा तो एकची धर्म। जगाला प्रेम अर्पावे।। जगी जे हिन अतिपतित। जगी जे दिन पददलित। तया जाऊन उठवावे जगाला प्रेम अर्पावे।।"[21] अर्थात वह कहते हैं की प्रेम से बड़ा कोई धर्म नहीं। संसार में लोगों को धर्म को लेकर द्वेष छोड़कर प्रेम का मार्ग चुनना चाहिए। रामायण और महाभारत जैसे पौराणिक ग्रंथो मे प्रेम की परिभाषा को दर्शाया गया है। जहाँ पाँच पांडव भाइयों और राम-सीता के आदर्शपूर्ण, निर्गुण प्रेम को दिखाया गया है। जहाँ माता

सीता एक राजकुमारी होने के बावजूद अपने पति के साथ चौदा साल का वनवास काटने को तैयार हो जाती हैं।

6) न्याय

अन्याय के विपरीत न्याय है। न्याय कर किसी का भला किया जा सकता है। लेकिन आज न्याय के मंदिर अदालत में कुछ वकीलों द्वारा झूठी वकालत कर अन्याय का साथ दिया जाता है। न्याय पूर्वक बर्ताव रखना महत्वपूर्ण हैं। ताकि किसी के साथ नाइंसाफी न हो और न हीं उससे किसी को दुःख पहुंचे। बचपन में शिक्षकों द्वारा न्याय पूर्वक फैसले लिए जाते थे।

मनुष्य में चिंतन करने की शक्ति होती है। जिससे वह, अपने धेय को प्राप्त कर सकता है, वह खुद जैसा चाहे बन सकता है, अपने मतों को व्यक्त कर सकता है आदि। मनुष्य मूल्यों को उत्पन्न कर उन्हें अपने रोजमर्रा के जीवन में इस्तेमाल में लाता है। मूल्यों से ही समाज बनता है और अवमूल्यन के चलते समाज का विनाश भी तय है। उदा:- भीष्म साहनी के शिष्टाचार कहानी में एक गरीब नौकर के द्वारा इस गुण को दर्शाया गया है। जो गालीयां, मार खाकर भी खुद के दुख को छुपाता है ताकि उससे दूसरों का अहित न हो।

संदर्भ:-

1) कुमार अरविंद, समांतर कोश, हिंदी थिसारस, निदशक, निदेशन बुक ट्रस्ट, नेहरू भवन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: - दिसंबर 1996, पृष्ठ क्रः- 356

2) दुबे कुमार अभय, समाज- विज्ञान विश्वकोश खण्ड-4, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 2013, पृष्ठ क्रः- 1485

3) सक्सेना प्रकाश राम, वर्धा हिंदी शब्दकोश, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, दुसरा संस्करण: - 2015, पृष्ठ क्रः- 962

4) भारती धर्मवीर, मानव मूल्य और साहित्य, मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण: - 1960 ई. पृष्ठ क्रः- 10

5) चन्द्र सुरेश, बीसवीं सदी का रामकाव्य और मूल्यबोध, अनंग प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 2002, पृष्ठ क्रः-72

6) माथुर प्रसाद प्रो. अगम, मेरे विचार, प्रगुन पब्लिकेशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:- 2011, पृष्ठ. क्र- 360

7) शुक्ला डॉ. जूही, साहित्य संगम, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण:- 2016,

8) राय डॉ. विनीता, मूल्य और मूल्य-संक्रमण, कौशिक प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ क्रः-1

9) शंभुनाथ, हिंदी साहित्य ज्ञानकोष खंड-5, प्रकाशक: - भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, प्रथम संस्करण: - 2019, पृष्ठ. क्र- 2816

10) वर्मा बहादुर डॉ. श्याम, प्रभात आधुनिक हिन्दी शब्दकोश, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:- 2014, पृष्ठ. क्र- 1084

11) बाचुळकर डॉ. अशोक, नाटककार भीष्म साहनी, श्रुति पब्लिकेशन्स जयपुर, प्रथम संस्करण: - 2005, पृष्ठ. क्र- 62

12) शेख मियाभाई डॉ, लियाकत, मानवीय मूल्यों की अवधारणा, स्वरूप तथा महत्व, लोकसेवा कला एवं् विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद (महा), 2018, पृष्ठ. क्र- 1

13) तायडे प्रा. अशोक, आँचलिक उपन्यालों में मूल्य विघटन, रोली प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण:- 2015, पृष्ठ. क्र- 76

14) अगरवाल डॉ. प्रज्ञा, गर्ग डॉ. अंकीत, मानव मूल्य एवं पर्यावरण अध्ययन, ठाकुर प्रकाशन, प्रथम संस्करण:- 2022, पृष्ठ. क्र- 12

15) भारती धर्मवीर, मानव मूल्य और साहित्य, मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण: - 1960 ई, पृष्ठ. क्र- 21

16) गुरूजी साने, भारतीय संस्कृती, वरदा प्रकाशन प्रा.लि. पुणे, प्रथम संस्करण:- जनवरी 2011, पृष्ठ. क्र-84

17) चौधरी डॉ. रुपाली, गाँधी नेहरू अम्बेडकर, रोली प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2015, पृष्ठ. क्र- 44

18) गुरूजी साने, भारतीय संस्कृती, वरदा प्रकाशन प्रा.लि. पुणे, प्रथम संस्करण:- जनवरी 2011, पृष्ठ. क्र-183

19) यादव जितेन्द्र, सम्पादकीय: अहिंसा परमो धर्म: अपनी माटी, नवंबर 1, 2021, पृष्ठ. क्र- 01

20) कोसम्बी धर्मानन्द, भगवान बुध्द जीवन और दर्शन, लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज, प्रथम संस्करण: - 2008, पृष्ठ. क्र- 104

21)https://samatechigani.blogspot.com/2017/03/blog-post_12.html?m=1

द्वितीय अध्याय: भीष्म साहनी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.1) व्यक्तित्व

हिंदी साहित्य के जाने माने लेखक भीष्म साहनी का नई कहानी आंदोलन और प्रगतिशील आंदोलन इन दोनों से जुड़ाव था। लेकिन प्रगतिशील आंदोलन से जुड़े रचनाकार के रूप में उनका उल्लेख ज्यादा किया जाता था। भीष्म साहनी सशक्त, निर्भीक, साहसी ,सफल और प्रतिष्ठित लेखक होने के साथ ही एक सफल रंगमंच के कलाकार भी थे। जिन्होंने 'तमस', 'आज के अतीत', 'झरोखे', 'भाग्य-रेखा', 'कबीरा खड़ा बाज़ार में' जैसी अपनी रचनाओं में अपने व्यक्तिगत अनुभवों को समाविष्ट किया हैं। उनके साहित्य में समाज का विस्तृत रूप दिखाई देता है। उन्होंने मध्य वर्गीय समाज का बनावटीपन, किसान की दयनीय स्थिती, निम्न वर्ग में आर्थिक समस्या के कारण गरीब की विवशता, पूंजीवादीयों द्वारा गरीब, लाचार का फायदा उठाया जाना, उन्हें अपमानित करना आदि अपने साहित्य के माध्यम से दर्शाने की कोशिश की है। भीष्म साहनी साहित्य के संदर्भ में कहते हैं कि, "लेखक का अपना सत्य जीवन के सत्य से निराला नहीं होता। न ही जीवन का सत्य और लेखक का सत्य दो

अलग-अलग सत्य होते हैं। एक ही सत्य होता है और वह जीवन का सत्य होता है। उसी को साहित्य वाणी देता है।"[1]

2.1.1) जन्म और बचपन

20 वी सदी का युग बहुत संवेदनशील युग था। आजादी के पूर्व जब लोग विदेशी शासकों के अंतर्गत गुलामी के दिन काट रहे थे, तब महान कथाकार और नाटककार भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 को रावलपिण्डी, जो वर्तमान में पाकिस्तान का हिस्सा है। वहाँ के एक संपन्न, हिंदू, मध्यवर्गीय आर्यसमाजी परिवार में हुआ था। भीष्म साहनी अपने परिवार की जन्मभूमि के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में लिखते हैं कि, "मूलतः हम लोग पंजाब के शाहपुर जिला में स्थित भेरा नामक कस्बे के (जो अब पाकिस्तान में है) रहने वाले हैं, जिसे छोड़कर हमारे पुरखा रावलपिण्डी में जाकर बस गए थे। भेरा, जेहलम नदी के तट पर स्थित, सदियों पूराना मध्ययुगीन कस्बा है, जो किसी जमाने में वाणिज्य और व्यापार का एक केन्द्र हुआ करता था।" [2] उन्होंने गुलामी के दिनों के साथ ही विभाजन की त्रासदी को भी बहुत नजदीक से देखा और अनुभव किया था। भीष्म साहनी बचपन में बहुत शरारती, खेल-कूद प्रेमी और घुमक्कड़ प्रवृत्ति के थे। इससे उल्टे स्वभाव के उनके भाई बलराज साहनी

थे जिन्हें शरीफ कहा जाता था। जिस वजह से उन्होंने अपनी मां से बहुत मार और डाट भी खाई है। विभाजन में अपने परिवार से दूर होने से पुर्व उन्होंने अपना पूरा बचपन रावलपिण्डी में ही बिताया। जहां वह पढ़े-लिखे, अपने भाई-बहनों के साथ रहे, अनुशासन का पाठ पढ़ा। 1915 के समय आर्य समाजी परिवार में बच्चों के नाम रामायण-महाभारत के किरदारों के नाम से चुनकर रखने की रीत थी। उस वजह से उनका नाम 'भीष्म' रखा गया। वह अपनी मां की ममता और पिता के शिष्टाचारी व्यवहार में पले बढ़े थे। भीष्म साहनी के समय आजादी न मिलने के कारण अंग्रेजों के शासन के खिलाफ लड़ाई जारी थी। इस वातावरण में उनके व्यक्तित्व का निर्माण हो गया था। उनका बचपन उतना ज्यादा आम बच्चों की तरह खेलकूद, मौज-मस्ती में नहीं बिता, क्योंकि वह बचपन में अक्सर बीमार रहते थे। जिस वजह से ज्यादातर समय वह घर पर बिताते थे। उस अवस्था में उनकी मां उनकी देखभाल करने का काम करती थी। उन्हें कहानियां सुनाती थी। कटोरे भर दूध पिलाती थी और उनका सिर अपनी गोदी में रख कर धीमी आवाज़ में अवसाद भरे गीत सुनाती थी। जो की प्रतीक था उनके मन में बसे दुख, कलेश का। जिन में मौत का जिक्र हुआ करता था। जिसके लिए उनके पिता हमेशा उनकी मां को डांटते और उन्हें दुख भरे गीतों को भुलाकर, आनंद भरे गीत सुनाने को कहते थे।

माँ की गोद में, गीत सुनते हुए, उन्हें पल भर में सुख भरी नींद आ जाती थी। ठीक हो जाने पर वह रावलपिण्डी के गलियों में घूमते, नहीं तो चलते टांगे के पायदान पर टांगे के ऊपर बैठकर पूरे शहर भर की सैर करते थे। उनका जन्म अच्छे-खासे, खाते-पीते, धनी परिवार में हुआ था। लेकिन उनके पिता ने अपने शुरुआती समय में गरीबी देखी थी। जिस कारण वह पैसों का दिखावा किए बगैर, सादा जीवन जीते थे। वह आर्य स्कूल में पढ़ते थे। जहां के लड़के अलग अलग तरह के परिवारों से आते थे जिस में ज्यादातर गरीब हुआ करते थे। डॉ. कृष्णा पटेल लिखते है कि,"अपनी रूढी परंपरा का, अपने माता -पिता के विचारों का उन्होंने विरोध भी किया था। उनके बंधनों को तोड़ वे मुसलमानों के बच्चों के साथ मित्रता करते या खेलते थे और उनके बचपन के दोस्त तो खासकर गरीब लड़के ही हुआ करते थे।"[3] वह मूर्ति कला में गहरी रुचि रखते थे, लेकिन आर्थिक समस्या के चलते उन्हें उस शौक से दूर होना पडा। वह अपने भाई बलराज साहनी के नक्शे कदम पर चलते रहे। कॉलेज के समय उन्हें हॉकी खेलना बहुत पसंद था। बी.ए के बाद एम.ए. में दाखिला भी हॉकी खेलने मिल पाए इसलिए लिया था। पर अपने भाई की देखा-देखी में और अपनी ना समझी की वजह से उन्हें वह भी खेलना छोड़ना पड़ा। भीष्म साहनी का 'झरोखा' उपन्यास एक प्रकार से आत्मकथात्मक

है। जिसमें मुख्य रूप सें उनके बचपन के बारे में लिखा गया है। घर में बच्चों के संबंध में,पढ़ाई को लेकर कोई भी नई चीज लाई जाती तो सबसे पहले घर के बड़े बेटे बलराज साहनी को दी जाती और उसके इस्तेमाल करने के बाद ही वह भीष्म साहनी को मिलती थी। छोटों द्वारा बडों के नक्शे कदम पर चलना उनके घर के किसी रीत समान था। जिसके संबंध में भीष्म साहनी कहते है कि,"भाई को मिलने वाली हर चीज़ घर में पहली बार आती है। आज उसे पीले रंग की ब्रह्मचारियों की धोती मिली है, अब वह गुरुकुल में पढ़ने जाया करेगा। सफ़ेद और काले रंग की लाठी भी मिली है। वह साथ वाले कमरे में पीली धोती पहन कर और हाथ में लाठी उठाये चलता हुआ हमारे सामने आया है। उसे देखते ही दोनों बहनें खिलखिला कर हँसने लगी हैं, पर माँ ने उसे छाती से लगाकर चूम लिया है। भाई को मिलनेवाली हर चीज में एक प्रकार का नयापन होता है, जब मेरी बारी आती है, तो वह पहले से जानी-पहचानी होती है, उसमें कोई नयापन नहीं होता।"[4]

2.1.2) स्वभाव

परीक्षत साहनी भीष्म साहनी के स्वभाव के बारे में लिखते हैं कि,"भीष्म जी अत्यन्त सौम्य, मृदुभाषी, मितभाषी थे।"[5] वह स्वभाव से शिष्टाचारी,

नम्र, संकोची, गर्व न रखने वाले व्यक्ति थे। उनमें बचपन से ही आवश्यकता से ज्यादा ही विनम्रता भरी थी। यह उनका गुण शीला जी को बिल्कुल भी पसंद नहीं था। उनका मानना था कि, विनम्र होना अच्छी बात है लेकिन, भीष्म जी तो कुछ ज्यादा ही विनम्र थे। इस कारण कोई उनका नाजायज फायदा न उठा ले इसकी चिंता उन्हें थी। उनमें सहानुभूति और सहनशीलता कुटकुट कर भरी थी, जिस वजह से कठिन से कठिन परिस्थिति में भी उसके पैर नहीं डगमगाए। फिर वह विभाजन के वक्त हो या फिर उनके व्यक्तिगत जीवन में, किसी भी समस्या से वह कभी घबराएं नहीं। बल्कि उस समस्या से या फिर उस परिस्थिति से उठकर वह आगे बढ़े। उन्होंने अपने आसपास, समाज में, अपने जीवन में जो भी अनुभव किया, समज में घटीत जो भी देखा उसे उन्होंने अपनी रचना के रूप में उतारा। उनकी रचनाओं में काल्पनिकता बहुत कम मिलती है। उन्होंने अपने जीवन में जितनी भी व्यक्तिगत तौर पर भूमिकाएं निभाई, फिर वह पति की हो, बेटे की हो, या फिर बड़े भाई की हो, वह बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभाई है। शीला साहनी उनके बारे में लिखती है कि,"भीष्म जी बहुत ही अच्छे पति हैं, बहुत ही Considerate, गुस्सा उन्हें कभी नहीं आता और कोई बात इन्हें खिझाती नहीं। उनमें सहनशीलता बहुत ज्यादा है। जब मैं थक जाती हूं तब मैं Peevish हो

जाती हूँ, मगर वह थकने के बाद भी वैसे ही सहज भाव बने रहते हैं। उनकी Sense of human बहुत ही बढ़िया है। काम के साथ-साथ एकआध बात ऐसी कह देते हैं कि मेरी हँसी छूट जाती है। बच्चों को पापा बहुत पसंद है। हमारा बेटा वरुण पापा के साथ घंटो बहस करता है। मगर भीष्म जी कभी Patience lose नहीं करते। बड़े आराम से उसके साथ बहस करते हैं, उसे समझाते हैं। बच्चों की कोई problem होती है, तो वह भीष्म जी के साथ discuss करते हैं और भीष्म जी उन्हें अपनी सलाह देते हैं।"[6] वह बहुत सहज, सरल, शांत और गंभीर व्यक्ति थे। कही हुई बात का पालन करना और अपने लोगों की परवाह करना उन्हें बहुत ही अच्छी तरह आता था। उन्होंने अपनी पत्नी के लिए अपना लिखने का वक्त भी बदल दिया था। बचपन में वह बहुत शरारती हुआ करते थे, लेकिन उनके पिता के अनुशासन ने उन्हें एक जिम्मेदार व्यक्ति में बदल दिया। उनका स्वभाव इतना उत्कृष्ट था, कि उनसे मिलने वाले हर व्यक्ति के मन में उनके सौम्य स्वभाव की एक अच्छी छाप छूट जाती। जिसे वह साहित्य रूप में उतार देते। वह मार्क्स और साम्यवाद में विश्वास रखने वाले थे। भीष्म साहनी को यात्रा करना, चित्र और कला प्रदर्शनों को देखना पसंद था। वह दिखने में दुबले-पतले, लम्बे, गोरे, तीखी नाक, नुकीली आँखे, आँखो पर चश्मा, चेहरे पर मुस्कान रखें थें।

2.1.3) परिवार

मनुष्य को संस्कारों से भरकर, उसका जीवन सार्थक बनाने का काम परिवार द्वारा किया जाता है। उनके आर्य समाजी परिवार मे उनके पिता का नाम हरबंस लाल साहनी था। वह नैतिकता को ज्यादा महत्व देते थे। जो व्यापार करते थे। उसी के साथ उनके पिता की कई एजेंसियाँ और कारखाने थे। तो वह कपडों के व्यापारियों से कपड़ों की ऑर्डर लेकर, वह अपने कारखोनों को भेजते थे और कपडों की ऑर्डर तैयार हो जाने पर, यानी माल कारखाने से तैयार हो आ जाने पर, उसका भीष्म के पिता को कमीशन प्राप्त हो जाता था। आर्य समाजी होने के नाते उनका व्यवहार भी उसी तरह का हो गया था। शुरुआत में उन्होंने गरीबी के दिन देखे थे। पर बाद में वह व्यापारी बन गए। जिस व्यापार में भीष्म जी भी उनका साथ दिया करते थे। भीष्म का परिवार रावलपिण्डी में एक मोहल्ले में रहता था। जहाँ ज्यादातर मुसलमानों के घर थे। जिनके साथ उनके पिता का अच्छा संबंध कायम था, लेकिन घर में आते ही वह अपने मुसलमान पडोसीयों की आलोचना करने लग जाते। डॉ. विवेक द्विवेदी लिखते है कि,"भीष्म जी के पिता समाजोन्मुख थे। समाज की बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए पूरी तन्मयता से कार्य करते। यद्यपि उनका कार्य क्षेत्र हिंदू धर्म तक ही सीमित था। फिर भी ये कार्य

बलराज और भीष्म जी के संस्कार बनते गए और मस्तिष्क में अमिट प्रभाव छोड़ते गए। शायद यही वजह है कि भीष्म जी का समूचा लेखन पूँजीवाद, सामंतवाद और शोषणवाद के विरुद्ध प्रतिपक्ष के रूप में खड़ा है।"[7] उनकी माँ का नाम श्रीमती लक्ष्मी देवी था। भीष्म साहनी अपनी माँ के बारे में कहते हैं कि," माँ धार्मिक वृत्ति की थीं, पर उनमें कट्टरता नहीं थी। वह मंदिर हो या गुरूद्वारा, या आर्यसमाज मंदिर, हर जगह पहुँच जाती थीं। उन्हें स्कूल जाने का मौका नहीं मिला था, पर अपनी मेहनत से उन्होंने पढ़-लिख लिया था। उनकी जिज्ञासा कभी शांत नहीं हो पाती थी, न ही ज्ञान-विज्ञान की उनकी भुख। कभी उर्दु सीखने बैठ जातीं, कभी अंग्रेजी। एक बार तो संस्कृत भी पढ़ने लगी थीं।"[8] वह शिष्टाचार की पक्की थी। उनकी माँ शगुन-अपशगुन में विश्वास रखने वाली थी। जिस तरह का बचपन अमीर बच्चों का होता है वैसा बचपन उनका नहीं था। परिवार में हर कई पाबंदीयों से बंधा हुआ था। जैसे:- सुबह ठंडे पानी से नहाना, आज्ञा का पालन करना, सिर पर चुटिया रखना, माँ के हाथ के सिले कपड़े पहनना, जोर से न हँसना, टप्पे न गाना, लडकीयों ने खीड़कीयों से न झाकना आदि। जिनका पालन करना अनिवार्य था। पालन न करने पर सजा भी दि जाती थी। जैसे घर के किसी भी सदस्य द्वारा गलती से भी गालियाँ देना मना था। अपशब्द बोलने पर भीष्म जी की

माँ उनका सिर अपने घुटनों में दबोचकर, मुँह में लाल मिर्च की चुटकी डाल देती थी। साथ ही वह धार्मिक विचार रखनेवाली महिला थी। एक बार जब भीष्म जी और बलराज जी मेले में गुम होकर घर वापस लौटे थे, तो उन्होंने उन दोनो की नज़र उतारी थी। उनका धार्मिक कट्टरतावादी विचारक परिवार था। भीष्म साहनी के माता-पिता दोनों समाज सुधारक का काम करते थे।

परिवार में सदाचार को सबसे ज्यादा महत्व दिया जाता था। भीष्म साहनी अपने साक्षात्कार में कहते हैं कि, " वह सोचते थें कि उनपर पिता का प्रभाव ज्यादा पड़ा था पर, असल में उनपर माता का प्रभाव ज्यादा पड़ा था। वह एक अच्छे, प्यार भरें, पारिवारिक वातावरण में रहे थें। 'इस कर्ता से डरते रहीयो, कर्ता जो चाहे कर दे' इस तरह के अवसाद भरे गीत उनकी माँ गाती थी।" [9]

उनके भाई का नाम बलराज साहनी था। जो एक अभिनेता, लेखक, दिग्दर्शक और प्रगतिशील विचार रखने वाले थे। जो कई लोगों के चहितें अभिनेता रहे हैं। इस अभिनेता के ओहदे को पाने के लिए उन्होंने मुंबई में बडा संघर्ष किया था। भीष्म सहनी के बड़े भाई उनके आदर्श थे। बलराज साहनी द्वारा लिखित किताब 'मेरी फिल्मी आत्मकथा' में स्थित

अनेक किस्सों में भीष्म साहनी का उल्लेख किया है। जिनके नक्शे कदम पर वह चलते थे। पर अफ़सोस, वह 13 अप्रैल 1973 को स्वर्ग सीधार गए। भीष्म साहनी की पांच बहने भी थी जिनकी मृत्यु हो चुकी है। जिसका बहुत बड़ा दुख उनके माँ के मन में रह गया था। जिसके संदर्भ में भीष्म साहनी कहते हैं कि,"मेरे घर में जन्म लेने से पहले मेरी तीन बहनें स्वर्ग सिधार चुकी थीं। मेरा बचपन अभी समाप्त नहीं हुआ था कि एक और बहन दाग़ दे गयी। और मैं अभी कॉलेज में पढ़ता था, जब पाँचवी बहन ने भी विदा ले ली और घर में हम केवल दो भाई रह गए।"[10] भीष्म साहनी उनकी सातवीं संतान थी।

2.1.4) शिक्षा एवं नौकरी

भीष्म साहनी के पिता हिंदी और संस्कृत भाष के समर्थक थे। जिस वजह से उनकी हिंदी और संस्कृत में प्रारंभिक शिक्षा घर पर अर्थात रावलपिण्डी में ही हुई। साथ ही कई वर्षों तक उनके घर पर, एक अध्यापक उन्हें हिंदी और संस्कृत पढ़ाने के लिए आते रहे। जहां स्कूल के दिनों में आर्य समाज के लोगों के जलसे के साथ-साथ किताबें भी बेची जाती थी। अलग-अलग लेखकों की अलग-अलग उत्कृष्ट रचनाएँ। जैसे:- प्रेमचंद, सुदर्शन की कृतियां, प्रेम पचीसी जैसे कहानी संग्रह आदि की पुस्तके बेची

जाती थी। जिस कारण उन्हें कई महान रचनाकारों के पुस्तक खरीद कर, उन्हें पढ़ने का मौका मिलता था। उसके उपरांत उन्होंने एक वर्ष अपने भाई के साथ गुरुकुल में बीताया। जिसके संदर्भ में भीष्म साहनी कहते हैं कि, "इससे पहले शहर के निकट एक गुरुकुल में भी डेढ़-दो साल तक पढ़े। पीली धोती और लाठी के साथ रोज़ गुरुकुल में जाते थे, अष्ठाध्यायी के सूत्र कण्ठस्थ करते थे। पर यह दौर ज्यादा दिन तक नहीं चला। पिताजी आयत के व्यापारी थे और आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता। गुरुकुल की पढ़ाई हमारे लिए उन्हें सीमित-सी लगी। भाई भी वहाँ नहीं पढ़ना चाहते थे, इसलिए हम डी.ए.वी स्कूल में आ गए।"[11] गुरुकुल जाने के लिए उनके पिता ने उनके लिए एक बूढ़ा घोडा (टट्टू) लाया था जिस पर बारी बारी से बैठ दोनो भाई गुरुकुल जाते थे। बलराज साहनी के द्वारा स्कूल जाने की इच्छा व्यक्त करने पर, उनके पिता को उससे संतुष्टि मिली क्योंकि उनके भी मन में वही चाह थी। इसके उपरांत उनके बड़े भाई और उन्हें डी.ए. वी स्कूल में उर्दू- अंग्रेजी शिक्षा लेने भेज दिया गया। स्वतंत्रता के उथल-पुथल में ही उन्होंने शिक्षा ग्रहण की। फिर 1937 में लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज से अंग्रेज़ी सीहित्य मे एम.ए की उपाधि हासिल करने के साथ ही उन्होंने अपने पिता के साथ व्यापार करना शुरू कर दिया था। जिसके संदर्भ में भीष्म साहनी का कहना है कि,

"मुझसे पहले मेरे भाई व्यापार करते थे और तीन साल तक करते रहने के बाद छोड़कर शांतिनिकेतन चले गए थे। मैंने निश्चय किया था कि भाई के चले जाने के बाद मैं घर में रहूँगा और पिताजी के साथ व्यापार करूंगा। मैं व्यापार करता रहा पर साथ ही साथ स्थानीय कॉलेज में ऑनरेरी तौर पर पढ़ाने भी लगा और नाटक भी खेलने लगा। इससे व्यापार की कोफ्त कम हो गई। थोड़ा-बहुत कांग्रेस में भी काम करने लगा। पर व्यापार का शौक भी दस साल तक गले के साथ लटका रहा। इससे निजात तब मिली जब देश का बँटवारा हो गया। "[12] पर असल में उन्हें साहित्य लिखने में ज्यादा दिलचस्पी होने की वजह से उनका व्यापार में मन नहीं लगता था। पर फिर भी वह व्यापार करते रहे और उसके साथ कॉलेज में पढ़ाना और अभिनय करने का काम उनका जारी रखा। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी की उपाधि हासिल की। भीष्म साहनी के प्रस्तुत कथन से यह समझ आ जाता है कि, उनके लेखन का प्रेरणा स्रोत कौन था "एक तो ये कि हमारे घर में कुछेक व्यक्ति थे जिनकी साहित्य में बड़ी गहरी रुचि थी। यूँ तो मेरे पिता की भी रुचि थी। वो... शेख सादी और कबीर के बड़े भक्त थे। फिर मेरी बुआ की बेटी सत्यवती मलिक कहानियाँ लिखती थीं। मेरे बहनोई चंद्रगुप्त विद्यालंकार जाने-माने लेखक थे। मेरे भाई की रुचि साहित्य की ओर

छोटी उम्र से ही पनपने लगी थी और कॉलेज के दिनों में वो कविताएँ आदि लिखने लगे थे। इस तरह के घर का माहौल भी साहित्यिक रुचि को प्रोत्साहन देनेवाला था।"[13] लिखने के लिए उनके शिक्षकों द्वारा भी उन्हें प्रेरित किया गया। उनका लेखन यशपाल और प्रेमचंद जैसे महान लेखकों से प्रभावित था। बाद में 1958 में पंजाब के कॉलेज में "हिंदी उपन्यास में नायक की कल्पना" इस विषय पर शोध कार्य करके पी. एच.डी की उपाधि हासिल की।

1947 में आजादी के मोहत्सव को मनाने के लिए जब दिल्ली गए, तब विभाजन घोषित कर दिया गया था और उन्हें अंदाजा तक नहीं था कि अब वह अपनी जन्मभूमि, रावलपिण्डी वापस नहीं जा पाएंगे। जिसके बारे में साहित्य अकादमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र में भीष्म साहनी बताते हैं कि,"जब विभाजन की घोषणा हुई। जब सिद्धांतों का स्वीकार किया गया। मेरे पिता ने मूल निवास स्थान छोड़ने के बारे में नहीं सोचा था। मेरे पिता ने कहा था कि, सरकारे बदल सकती है, शासक बदल सकता है, लेकिन जनसंख्या वहीं रहेगी। मेरी भी यही भावना थी। 13 अगस्त को मैं रावलपिण्डी से दिल्ली के लिए निकला। मैं स्वतंत्रता दिवस से पहले के उत्सव का आनंद लेने के लिए एक सप्ताह के लिए आया था और मैंने अपने पिता से कहा कि, मैं एक सप्ताह में वापस आऊंगा। यह मेरे मन

में नहीं आया था कि, इससे मैं अपने भूमी से पूरी तरह नाता तोड़ लूंगा। जब ट्रेन मेरठ पहुंची तो मुझे एहसास हुआ कि सभी संपर्क टूट गए हैं। यह मेरे लिए एक तरह का अप्रत्याशित विकास था।"[14] इस तरह जब वह अपने परिवार से दूर हो गए। तो वह फ़िल्म जगत् में अपना नसीब आजमाने मुंबई आ गए लेकिन वहां काम न मीलने के कारण कुछ समय तक मुंबई मे बलराज साहनी के निवास स्थान पर वह बेकार रहे। लेकिन बाद में, दिल्ली के कालेज, खालसा कालेज, अम्बाली के कालेज आदि कालेजों मे पढ़ाने का मौका मिला। उसी के साथ पत्रकारिता, इप्टा नामक नाटक मंडली में काम, सात वर्ष 'विदेशी भाषा प्रकाशन गृह' मोस्को में अनुवादक के तौर पर काम किया। जिसके अंतर्गत उन्होंने बीस रुसी पुस्तकों को हिंदी में अनुवादित किया। 1965 से लेकर तीन वर्षों तक 'नई कहानी' जैसी पत्रिका का संपादन कार्य संभाला। उन्होंने कई नाटकों, फिल्मों, धारावाहिक तक में काम किया था। नाटक के क्षेत्र से वह ज्यादा आकर्षित थे। इसी बीच उनकी कृतीयों का लेखन और प्रकाशन कार्य भी जारी था। जिसमें उन्हें उनकी पत्नी और बच्चों का साथ मीला। 1993 से 1997 तक वह 'साहित्य अकादमी एक्जिक्यूटिव कमेटी' के एक सदस्य भी रहे।

2.1.5) विवाह

1944 में भीष्म साहनी का विवाह श्रीमती शीला जी से हो गया था। तब उनके बीच 8 साल का फर्क था। शीला जी लिखती है कि,"जब मेरी शादी हुई तब मेरी उम्र 20 वर्ष और भीष्म जी की 28 वर्ष थी। हम दोनों एक-दूसरे को शादी से पहले, थोड़ा-बहुत जानते थे क्योंकि भीष्म जी की मौसेरी बहन बी.ए में मेरी जमात में पढ़ती थी, और भीष्म जी ने एकाध बार हमें पढ़ाया भी था। हमारी दोनों की शादी भीष्म जी की बहन की ही पहलक़दमी पर हुई थी। वह मेरी पक्की सहेली थी और भीष्म जी को भी बहुत चाहती थी। भीष्म जी के पिताजी और मौसाजी हमारे घर 'सगन' लेने आये और केवल सवा रूपया लेकर चले गए। भीष्म जी ने ही ज़ोर दिया था कि वह केवल सवा रूपया ही लें।"[15] भीष्म साहनी बहुत सीधे-साधे व्यक्ति थे, जिस वजह से उन्होंने शीला जी से सगाई भी सीधे-साधे ढंग से सवा रूपया लेकर की थी। उस समय दोनों एक दूसरे के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। शीला जी पढ़ी लिखी थी, रेडियो स्टेशन पर काम करती और बचपने स्वभाव की थी । पर भीष्म जी उससे विपरीत, बड़े ही शांत और गंभीर स्वभाव के थे। फिर भी दोनों का एक दूसरे के साथ अच्छा तालमेल बैठता था। शीला साहनी भीष्म साहनी के लेखन क्षमता के बारे में लिखती है कि," भीष्म जी शोर हो, गर्मी हो, सर्दी हो, पंखा चल रहा हो या बंद हो, सख्त से सख्त गर्मी पड़ रही हो, टी•वी•

या रेडियो चल रहा हो, कही भी लिख सकते हैं, कोई चीज उन्हें इरिटेट नहीं करती और न ही डिस्टर्ब करती है।"[16] वह एक ऐसे आधुनिक, प्रगतिशील लेखक हैं जो कठिन परिस्थिति में भी अपने लेखन पर केंद्रित रह कर लिख सकते हैं। भीष्म साहनी जो भी कहानी लिखते थे उसे सबसे पहले अपनी पत्नी को पढ़ने के लिए देते थे और वह उसपर अपनी राय भी बताती थी। वह चाहते थे कि कोई उनकी रचना पढ़ कर अपना मत उसपर बताएं। जिसको ध्यान में रखकर वह अपनी रचना को और बेहतर बनाने की कोशिश करते। वह दोनों एक दूसरे को अच्छी तरह समझते भी थे। जब भी भीष्म साहनी जी के लेखन के वक्त कोई मेहमान घर आ जाता,तो शीला जी अपने पति की मौनता को समझते हुए खुद ही उन मेहमानों से बातचीत करती थी। भीष्म साहनी के दोस्तों का उनकी पत्नी श्रीमती शीला जी को लेकर कहना था कि," भीष्म को 'एक में तीन' जैसी बेनयाज बीवी मिली हुई है। बीवी- प्रेमिका और पाठिका- थ्री इन वन।" [17] अर्थात उन्हें तीन-तीन भूमिका निभाने वाली बीवी मिली थी। जो उनकी पत्नी, प्रेमिका और उनकी हर रचना सबसे पहले पढ़कर उसपर अपनी राय देने वाली पाठिका थी।

उनकी दो संताने है, बेटा और बेटी। बेटी 'कल्पना' की शादी हो चुकी है और लड़का 'वरुण' पढ़ाई पूर्ण कर नौकरी कर रहा है। उनकी पत्नी

श्रीमती शीला जी की मृत्यु के बाद वह टूट से गए थे लेकिन फिर भी उन्होंने खुद को संभाल लिया था।

2.1.6) पुरस्कार

भीष्म साहनी जैसे महान साहित्यकार को उनके उत्कृष्ट कृतियों की वजह से कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। वह है:- पंजाब सरकार के भाषा विभाग से 'शिरोमणि लेखक पुरस्कार'(1975) प्राप्त हुआ। 'तमस' जैसे उत्कृष्ट उपन्यास के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित (1976), 1979-80 में दिल्ली प्रदेश साहित्य कला परिषद द्वारा सम्मानित और पुरस्कृत किए गए, एफ्रो-एशियायी लेखक संघ द्वारा 'लोटस पुरस्कार' प्राप्त हुआ (1980), सन् 1983 में 'सेवियत लैण्ड नेहरू' पुरस्कार से संम्मानित किया गया, दिल्ली प्रदेश साहित्य कला परिषद द्वारा सम्मानित और पुरस्कृत एवं, 'हानूश' (नाटक) एवं 'कबीरा खड़ा बाजार में' और 'झरोखे' उपन्यास पर भी उन्हें इनाम प्राप्त हुआ।

2.1.7) मृत्यु

11 जुलाई 2003, दिल्ली में 87 वर्ष की आयु में भीष्म साहनी का निधन हो गया था। उनके अंतिम संस्कार के बारे में नामवर सिंह लिखते हैं कि, " उस रात 'आज की अतीत' ही पढ़ रहा था। भीष्म साहनी का

आख़िरी कलाम। किताब ख़त्म की तो सुबह हो रही थी। सूरज निकला न था, लेकिन एक आभास था। उसके होने का। कहीं-न-कहीं। जल्दी-जल्दी तैयार होकर भागा लोधी रोड वाले शवदाह की ओर। चीता सजी थी। चिरी लकड़ियों की शैय्या पर भीष्म लेटे थे। पितामह साहित्य के। इधर वेद मन्त्रोच्चार और उधर पंक्तिबद्ध बौध्द भिक्षुओं का समवेत मन्त्र पाठ। गरज की भीष्म जी के 'वाङ्चू' भी इस मौके पर मौजूद थे। 'सेकुलर' सज्जनों के लिए यह सब 'पेक्यूलियर' था। कुछ-कुछ धर्मसंकट-सा। भीष्म साहनी की अन्त्येष्टि में ऐसा धार्मिक अनुष्ठान! चिता की आग की लपटें उठ रही थीं और मेरी आँखों के सामने ताजा- ताजा पढे हुए 'आज के अतीत' के आख़िरी पन्ने फड़फड़ा रहे थे।"[18] 'आज के अतीत' जो की उनकी आत्मकथा है, जिसमें उन्होंने अपनी जीवन यात्रा को एक कथा की तरह व्यक्त किया है। अपने जिंदगी के छोटे-छोटे पहलुओं को, हर उस इंसान को याद किया है जो उनके जीवन का एक हिस्सा बना है, अच्छी और बुरी दोनों यादों को उन्होंने इस आत्मकथा में संजोने की कोशिश की है। साहित्य से उनका इतना जुड़ाव था कि अपनी आखिरी सांस तक वह साहित्य ही लिखते रहे।

2.2) कृतित्व

भीष्म साहनी, एक महान साहित्यकार ने, हिंदी साहित्य को अपनी कई उत्तम कृतियों से समृद्ध किया है। उनके साहित्यिक जीवन की शुरुआत दसवीं कक्षा से ही हो गई थी। जब उनकी 'अबला' नामक कहानी इण्टरमीडिएट कॉलेज के पत्रिका में सर्वप्रथम छपी थी। अर्थात उन्होंने पहले कहानीकार के रूप में साहित्य के क्षेत्र मे प्रवेश किया। अपनी मूल्यवान रचनाओं से, समय के साथ वह एक प्रगतिशील एवं प्रसिध्द कहानीकार,उपन्यासकार और नाटककार बन गए। बलराज साहनी, भीष्म साहनी के लेखन पध्दति के बारे में लिखते है कि, "अपनी बात सुनाने की बजाय ज़्यादा दुसरे की सुनता है। कहानी की कथावस्तु का चुनाव भी वह बड़े धीरज से करता है। साधारण लोगों के जीवन की छोटी-छोटी बातें वह खुद अपनी आँखों देखता है, उन लोगों की सामाजिक और व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है, पात्रों को कल्पना में से नहीं, जीवन में से खोजता और चुनता है। लिखते समय भी वह यथार्थ से ज्याद़ा और अपनी कल्पना से कम काम लेता है।"[19] अर्थात वह मानवतावादी दृष्टिकोण रखनेवाले होने के कारण जीवन, समाज के यथार्थ से अपनी रचना के रूप का निर्माण करते थे। वह कोई भी लेखन कार्य जल्दबाज़ी मे करना पसंद नहीं करते थे। विभाजन की त्रासदी, लोगों की पीडा को भी उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा व्यक्त किया है, पर वह सिर्फ इस

उद्देश्य से नहीं कि, उससे पाठकों को कोई सीख मिले तो, उन रचनाओं को लिखने का मुख्य उद्देश्य मनुष्य की भीषण परिस्थिति को रेखांकित करना था। विभाजन की त्रासदी के यथार्थ को सामने लाना था। भीष्म साहनी साहित्य और जीवन के यर्थात के बारे में कहते हैं कि,"जीवन का यथार्थ और साहित्य का यथार्थ एक नहीं होते। जीवन साहित्य के लिए कच्ची सामग्री जुटाता है, और लेखक का संवेदन, उसकी कल्पना, उसका रूप-कौशल उसे कला का रूप देते हैं।"[20] यानी समाज द्वारा लेखक को अनुभव, लेखन सामग्री प्राप्त होती है। लेकिन उस सामग्री को रचना में ढ़ालने का काम एक लेखक ही करता है। उन्होंने कभी भी विचारधार द्वारा खुद के रचनाओं को नियंत्रित होने नहीं दिया। उनके द्वारा वामपंथी विचारधारा अपनाने की वजह से वह अपनी हर रचनाओं में मानवीय मूल्य शामिल करना नहीं भूले। भीष्म साहनी ने अपनी कुछ रचनाओं को विभाजन, उनकी जन्मभूमि पंजाब को केंद्र बिंदु बनाकर रचा है। उस साहित्य का लेखन उन्होंने इतनी आत्मीयता के साथ किया है कि, उनका पठन करने वाला पाठक उस रचना में छिपे विचारों, भावनाओं को समझ, उनसे जुड पाता है। जिस संदर्भ में नामवर सिंह कहते है कि, " भीष्म जी जब उस पंजाब को जिसे वह पीछे छोड़ आए थे, जब उसके बारे मे लिखते है, जितना डूब कर लिखते है और जितनी नजदीक से

उसको जानते है। भीष्म साहनी जब उस जिंदगी के बारे में लिखते है तो वो उन उचाइयों को छूते हैं। जहां दिल्ली के बारे मे, यहा की जिंदगी के बारे में लिखते हुए उन उचाईयों को नहीं छूपाते।"[21] भीष्म साहनी संकीर्णतावाद और साम्प्रदायिकता के खिलाफ थे। उनपर इल्जाम लगाया गया कि, वह सच्चे वामपंथी नहीं थे, उनकी कहानियों में सांप्रदायीकता ,के खीलाफ़ चीजे नहीं मिलती क्योंकि वह सत्ता पक्ष के साथ ढुलमूल तरह का बर्ताव रखते थें। पर उनकी कई रचनाएँ है, जैसे:- तमस उपन्यास , पाली, अमृतसर आ गया हैं कहाँनिया, हानुश, मुआवजें, कबीरा खडा बाज़ार में आदि नाटक जिन में उन्होंने दंगो, सांप्रदायिकता की असलियत को उजागर करते हुए मानव पीड़ा को दर्शाया है।

2.2.1) उपन्यास

भीष्म साहनी एक उत्कृष्ट कहानीकार होने रे साथ ही एक उत्कृष्ट नाटककार भी है। जिन उपन्यासों में व्यक्तिगत समस्याओं के साथ , सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया गया है। अर्थात उनके उपन्यास समाज के विडंबनाओं , समस्याओं के तहत निर्माणीत होते हैं। भीष्म साहनी के कुल सात उपन्यास है:- झरोखें(1976), कड़ियाँ(1970), तमस(1973), बसंती(1980), मैयादास की माड़ी(1988), कुंतो(1993),

नीलू नीलिमा निलोफ़र(2000)। जिन में व्यक्तिगत समस्याओं के साथ सामाजिक समस्याओं को भी चित्रित किया गया हैं। ज्यादातर उपन्यासों में मध्यम वर्ग के बदलते स्वभाव का चित्रण किया गया है।

2.2.2) कहानी

उनके नौ कहाँनी संग्रह है:- भाग्यरेखा(1953), पहलापाठ(1957), भटकतीराख़(1966), पटरियाँ(1973), वाङ्चू(1978), शोभायात्रा(1981), निशाचर(1983), पाली(1989), डायन(1998) और तीन चुनिंदा कहानियों के संग्रह वह है:- प्रतिनिधि कहाँनिया(1993), मेरी प्रिय कहाँनिया(1993), चर्चित कहाँनिया(1997)। जितेंद्र भाटिया भीष्म साहनी की कहानियों के बारे में लिखते हैं कि," मुझे स्वयं ताज्जुब होता कि सहज हिन्दी लिखने वाला यह बेहद पठनीय लेखक मेरे परिवार, उसके रहन-सहन, उसकी विसंगतियों के बारे में इतनी बारीक और छोटी-छोटी बातें कैसे जानता है। भीष्म जी की कहानियों की बुढ़िया माँ की शक्ल, उनका पहनावा, उनका बोलने का ढंग,- सभी कुछ मेरी अपनी दादी के चरित्र से चुराया हुआ लगता था।"[22] अर्थात, समाज की वास्तविकता को प्रस्तुत करने के साथ ही वह अपनी रचनाओं के पात्रों का चयन भी समाज से ही करते थे। ताकि वह उन किरदारों से, पाठकों का एक जुड़ाव महसूस करवा पाए।

पाठकों को वास्तविक जीवन में स्थित समस्याओं से अवगत करा पाए। उन्होंने बदलते मानवीय संबंधो, टुटते मानवीय मूल्यों को अपनी कहानियों में दर्शाया है।

2.2.3) नाटक

समकालीन नाटककारों में भीष्म साहनी का नाम विशिष्ट रूप से लिया जाता हैं। उनके द्वारा लिखित नाटक निम्नलिखित है:- हानुश(1977), कबीरा खडा़ बाजा़र मे(1981), माधवी(1984), मुआवज़ें(1993), रंग दे बसन्ती चोला(1996), आलमगीर(1999)।

मुआवज़ें(1993) नाटक भीष्म साहनी ने मूल रूप सें पंजाबी भाषा में लिखा था। पर बाद में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नियमों के अनुसार उनको उस नाटक को हिंदी भाषा में अनुवादित करना पडा। जिसके बाद यह नाटक रंगमंच पर भी खेला गया। यह एक व्यंग्यात्मक प्रहसन है। यानी ब्लैक कॉमेडी। जिसके द्वारा उन्होंने विडंबनापूर्ण स्थिति पर व्यंग्यात्मक चोट करने की कोशिश की।

2.2.4) निबंध

1947- 1984 के अंतर्गत उनके निबंधों को 'अपनी बात' नामक निबंध संकलन की किताब में 1991 में प्रकाशित किया गया। जिसमें गर्दिश के दिन, मैं अपनी नजर में, मेरा प्रिय पात्र, 'कफन': आर्थिक चेतना के जटिल आयाम, मार्क्सवाद और साहित्य जैसे निबंध संकलित है।

2.2.5) बाल साहित्य

'गुलेल का खेल' और 'वापसी' 1989 में प्राकाशित उनके दो बाल साहित्य है। दोनो ही 'मैं' शैली में है। पहली किताब में सदाचार के उद्देश्य के साथ मनोवैज्ञानीक तथ्य का उदघाटन किया गया है। तो दुसरी किताब में मानवीय प्रवृत्तियों को रेखाकित किया गया है।

उसी कें साथ उन्होंने **जीवनी** लिखी है:-'मेरे भाई बलराज। जिसमें उन्होंने अपने भाई बलराज साहनी के जीवन के छोटे-छोटे यादों को पिरोया है। ‘आज के अतीत' नामक अपनी **आत्मकथा** भी उनके द्वारा लिखी गई।

<u>संदर्भ:-</u>

1)साहनी भीष्म, अपनी बात, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016, पृ. क्र:- 27

2) साहनी भीष्म, मेरे भाई बलराज, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, प्रथम संस्करण: - 1985, पृ. क्र:- 02

3) पटेल कृष्णा, कथाकार भीष्म साहनी, चिन्तन प्रकाशन, प्रथम संस्करण: -2009, पृष्ठ क्र. 17

4)सक्सेना राजश्वर: प्रताप ठाकुर, भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना, वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 1982, पृष्ठ. क्र. 49

5) परीक्षत साहनी, मेरे पिता की यादें: बलराज साहनी, मंजुल पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण: - जुलाई 2021, पृष्ठ क्र: - 13

6)सक्सेना राजश्वर: प्रताप ठाकुर, भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना, वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 1982, पृष्ठ. क्र. 66

7)द्विवेदी डॉ. विवेक, भीष्म साहनी: उपन्यास साहित्य, नवोदय सेल्स नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण:- 1998 पृष्ठ क्र.17

8) साहनी भीष्म, मेरे साक्षात्कार, प्रथम संस्करण: - 1996, पृष्ठ क्र. 146

9)भीष्म साहनी का साक्षात्कार, प्रसार भारती आर्चीव्ज, https://youtu.be/oFYvcY1yhCK?si_X74e9ovoQephUF3G

10)साहनी भीष्म, अपनी बात, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016, पृ. क्र:- 9

11)साहनी भीष्म, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 1996, पृष्ठ. क्र. 146

12) सक्सेना राजश्वर: प्रताप ठाकुर, भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना, वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 1982, पृष्ठ. क्र. 31

13)साहनी भीष्म, मेरे साक्षात्कार, किताब घर प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 1996, पृष्ठ. क्र. 88

14) ए डॉक्यूमेंट्री फिल्म, भीष्म साहनी, साहित्य अकादमी, दिल्ली, (साहित्य अकादमी आर्चिव्ज वेबसाइट) नंदन कुध्यादि द्वारा- https://youtu.be/5YjvORz4wYQ?si=Jg3Q08N24SIOoxDB

15)सक्सेना राजश्वर: प्रताप ठाकुर, भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना, वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 1982, पृष्ठ. क्र. 65

16) वही पृष्ठ. क्र:- 68

17) वही पृष्ठ, क्र: - 61

18)राय हरियश, भीष्म साहनी सादगी का सौन्दर्यशास्र, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 2020, पृष्ठ क्र. 17

19) वही पृष्ठ क्र. 63

20)साहनी भीष्म, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 1996, पृष्ठ. क्र. 103

21) ए डॉक्यूमेंट्री फिल्म, भीष्म साहनी, साहित्य अकादमी, दिल्ली, (साहित्य अकादमी आर्चिव्ज वेबसाइट) नंदन कुध्यादि द्वारा- https://youtu.be/5YjvORz4wYQ?si=Jg3Q08N24SIOoxDB

22)भाटिया जितेन्द्र, मानवीय जिजीविषा का उत्सव मनाने वाले लेखक के लिए दो शष्द, अगस्त 2003, पृष्ठ क्र. 1

तृतीय अध्याय:- भीष्म साहनी के 'भाग्य-रेखा' कहानी संग्रह में चित्रित मानवीय मूल्य

मनुष्य एक बुद्धिमान जीव है, क्योंकि सही-गलत, सत्य-असत्य को परखने की क्षमता उसके पास है। साहित्य जो की मनुष्य द्वारा निर्मित हैं, वह मानवीय चेतना का नेतृत्व करता है। आधुनिक युग में मानवीय मूल्यों का विघटन एक बहुत बड़ी समस्या है, जिसे दृष्टि में रखकर ही हम आधुनिक साहित्य के अनेक पहलुओं को समझ सकते हैं। इस पूरे संसार में, मनुष्य को ही मूल्यों का निर्माण कर्ता माना गया है। नीत्शे के अनुसार "वह मनुष्य जो आज है, जो वर्तमान है वह निरर्थक है, वह मूल्यों का उद्गम स्रोत नहीं है, क्योंकि यह अखिल सृष्टि-विकास का परम लक्ष्य नहीं है वह तो एक सेतु मात्र है- पिछली जीव सृष्टि और आगे आनेवाले एक महामानव के बीच का सेतु। इसीलिए इसका हित-अहित, इसके प्रति उचित अनुचितका मापदण्ड स्वतः यह वर्तमान मनुष्य नहीं है, उसका वास्तविक मापदण्ड-अ-वर्तमान मनुष्य है जो महामानव है!" [1] अर्थात उनके अनुसार आधुनिक समय के मनुष्य का होना अर्थहीन होने के साथ-साथ, न ही उसके द्वारा मूल्यों की उत्पति हुई है और न ही वह संपूर्ण सृष्टि के विकास का एकमात्र धेय है। आधुनिक मानव तो सिर्फ उस सेतु की भाँती है, जो आदिमानव और भविष्य में आनेवाले

अत्यंत महान व्यक्तित्व वाले मानव को जोडे रखने और पारंपारिक तौर पर मिले मूल्यों को आगे की पीढी तक पहुंचाने का काम करता है। उस मनुष्य का हित अहित, उसके लिए अच्छा-बुरा यह सब का मानक आधुनिक मनुष्य न होकर भविष्य में आनेवाला अत्यंत महान व्यक्तित्व वाला मानव है। किसानों, मजदूरों, गरीब परिवार के सदस्यों के साथ मूल्य के टूटने बदलने के कारण हो रहे मानवीय दुर्व्यवहार जिससे गरीब की विवशता, किसान की दयनीक स्थिति, मध्यवर्गीय लोगों का बनावटीपन झलकता है। बिना मूल्यों के साहित्य का भी कोई महत्व नहीं रहता। मनुष्य में सुधार लाने का काम साहित्यकार की लेखनी द्वारा किया जा सकता है और भीष्म साहनी उन साहित्यकारों में से एक है।

3.1) अहिंसा

3.1.1) जोत

भीष्म साहनी की 'जोत' इस कहानी में मानवीय मूल्यों को टुटते दिखाया गया हैं। कहानी में आर्थिक समस्या के चलतें, भारतीय किसान की दयनीय स्थिति को व्यक्त किया गया है। जहा मानव के मानव मूल्य का अवमूल्यन हो जाने के परिदृश्य को दिखाया गया है। जिसमें जानकु और उसकी पत्नी उत्तमी दोनो किसान थे। जानकु ने, उत्तमी के जिद

करने पर खुदका पैतृक कोठा बेचकर, तुकडों में बटी जमीन खरीद तो ली थी लेकिन, उस जमीन से वह कोई फायदा नहीं पाता था। जो उसका और उसके बच्चों की जीविका का एकमात्र आधार था। उसकी वह अनाज लगी जमीन बारीश में चीर पड़ने के कारण सरकने लग जाने पर, उसे बचाने के लिए जानकु ने पटवारी सें विनती की, पर वह खुदका फायदा उससे निकालें बगैर उसकी मदद क्यों करता। जानकु को सिर्फ एक छोटी सी मदद चाहिए थी। वह उनकी फितरत से अनजान था। पटवारी का अमानवतावादी रूप का दर्शन इस दृश्य में कराया गया है। जहाँ दया इस मूल्य का अवमूल्यन स्वार्थ के कारण हो जाता है। वह जानकु की गरीब परिस्थिति को जानकर भी, खुदके स्वार्थ के चलते उसे भगवान को बकरे का चढ़ावा चढ़ाने को कहता हैं। यहाँ चौधरी / पटवारी / उच्च वर्ग के लोग गरीब किसान के श्रध्दा का गलत फायदा किस तरह उठाते हैं उसको दिर्शाया गया है। पटवारी गरीब किसान जानकु से, जमीन सरकने पर, यह देवी का कोप कहकर उससे फायदा बटोरना चाहता था। इस कहानी में चौधरी या गाँव के उच्च वर्ग के लोग, गरीब किसानों के अंधश्रध्दा और उनकी भगवान के प्रति भक्ति का अमानवीय बनकर लाभ उठाते हैं। उसी के साथ गाँव के पटवारी /हाकीम/ रेंजर जो गरीब किसानों के लिए भगवान समान होते हैं, वह किस तरह बूरे स्वभाव के चलते

स्रियों पर बुरी नज़र रखते हैं, उसका चित्रण प्रस्तुत है। पर एक गरीब, बेबस बनकर, उस चीज को लेकर उनका विरोध तक नहीं कर पाता। बल्कि अपनी मजबुरी के चलते उसे उसी इंसान के पास मदद के लिए गिड़गिड़ाना पड़ता है। इन पटवारियों के तलहटों को न चाहतें हुए भी सहलाना, उनके सामने मदद की भिक मांगनी पड़ती है। वह जमीन ही जानकु का और उसके दो बच्चों का एक मात्र जीवन यापन का साधन था। जिसे बचाने के लिए जानकु कुछ भी करने के लिए तैयार था। मजबूरी जानकु को अंधश्रध्दा पर भी विश्वास रखने को मजबुर कर देती हैं। रेंजर भी खुदके नुकसान के बारें में सोचकर ही जानकु की सहायता करने के लिए तैयार हो तो गया था पर, उस सहायता के चलते वह जानकु के खेत का नुकसान कर बैठा। जहाँ खुदकी जमीन फिसलकर नष्ट हो जाने की स्थिति को देख, वह खुदके बच्चों को थोडा बहुत खाने को कुछ मिल जाने की आशा में खेत में जहाँ अनाज दिखता तोड़ निकालने लगा था। इससे पहले की उसका खेत पुरी तरह नष्ट हो जायें। जानकु, खुदके और अपने बच्चों की लाचारी, परिस्थिति, चाह से मजबूर होकर हाकिम के स्वार्थ का शिकार बन जाता है। उसका खेत फीसल रहा होने पर वह अमानवीय रूप धारण कर यह भी कहता हैं कि,"तेरी ज़मीन फिसल रही है जानकू और तू बैठा चिलम पी रहा है। ज़मीन रहे या जाए,

लगान देना होगा, पहले ही कह दूँ। "[2] इस वाक्य से स्पष्ट हो जाता है कि, खुदको शिष्टाचारी और सभ्य दिखाने वाले उच्च वर्ग के लोगों में अवमूल्य भरें पड़े होते हैं। जिससे उनकी निर्दयता झलकती है। उदाहरणार्थ 'प्रेमचंद' का 'गोदान' उपन्यास। जिसमें 'होरी' जैसे गरीब किसान को रायसाहब जैसे पूंजीपतियों द्वारा अपने पैरों तले गुलाम बनाकर रखा जाना, पैसे उकेरे जाना, उसका अपमान कर उसे जानबूझकर कर्जे के चक्रव्यूह में फसाना, उसे परेशान कर उससे असुरि आनंद प्राप्त करना जारी था।

3.1.2) खून के छींटे

भीष्म साहनी के 'खून के छींटे' कहानी में मूल्यों को बिखरते दिखाने के साथ ही भुख, लालच, स्वार्थ, लाचारी, गरीबी से त्रस्त मनुष्य के अमानवीय बनने का चित्रण किया गया है। जहाँ एक जाट, जो अपने ही चचेरे भाई को पागल साबित कर उसकी एक बीघा जमीन हड़पने की चाह रखता था। पर उसके पीछे भी उसकी मजबूरी और किसीकी चालाकी छीपी थी। कहानी में उच्च वर्ग या लम्बरकार द्वारा अपनी निर्दय, हिंसक अवमूल्यों के चलते,गरीब, लाचार किसान पर किये जाने वाले शोषण के साथ-साथ लम्बरदारों के चालाक प्रवृत्ति को भी दर्शाया गया है। जहाँ भारी

बारिश के कारण बर्बाद हुई फसल के उस दुखद वातावरण में, जाट की अनाज पाने की मजबूरी को भापकर उसे अपने ही परिवार के सदस्य, अपने ही चचेरे भाई पर अत्याचार करने के लिए बाध्य कर देता हैं। उसके मन में लालच, हीन भावना पैदा करने के पीछे लंबरदार का हाथ था। जो जाट को अपनी बातों से बहका देता है। ताकि वह खुद ही खुद के नज़रों में गिर जाए। लम्बरदार जैसे बड़े लोग, एक गरीब किसान का इसी तरह शोषण करते, लाचारों के मन में बुरे विचार भरकर उनसे कुकर्म करवाते हैं। ताकि वह आपस में ही झगड़ कर मर जाए और उससे इन लम्बरदारों या जमीन्दारों को कुछ फायदा हो। मनुष्य की मानवता, लालच और स्वार्थ की वज़ह से एक ही क्षण में बदल जाती है। जब जाट के मन में अपने ही भाई की जमीन हड़पने का लालच पैदा हो गया, तो वह बड़ी क्रुरता के साथ उसे गालियां देकर, रस्सी से बांधकर, जानवरों की तरह मारते हुए, उसे पागल करार करते हुए, उसकी जिंदगी बर्बाद करने का काम भी वह उसे पागलखाने में भर्ती करके करने ही वाला था। इस चीज से कहानी में यह दर्शाने की कोशीश की गई हैं कि, जब लालच, हिंसा, अन्याय, कायरता जैसे अवमूल्य जब किसी मनुष्य पर हावी हो जाते हैं तो वह अपनों का भी अहित करने से चुकते नहीं हैं। वह अपनों के खुन तक के प्यासे बन जाते हैं। यह वर्तमान काल में ज्यादा तौर पर

देखा जाता है। जहाँ एक परीवार में जायदाद को लेकर झगडें चलते हैं। हँसी खुशी से, एक साथ, सुख-दुख बाटकर रहते परिवार में कुछ लोगों के स्वार्थ के वजह सें दरार पड़ जाती है। अंत में उसमें बसे प्रेम, भाईचारा, माया, मानवता जाग जाने के कारण जाट को अपनी गलती का अहसास हो ही जाता है और यह भी समझ आ जाता है कि कौन अपने और कौन पराए हैं। उस वक्त जाट सच को कबूल करते हुए कहता है कि," यह सच कहता है, सब ठीक कहता है। यह मेरे चाचे का बेटा है बाबू, इसकी एक बीघा ज़मीन है। नंबरदार ने मुझे भरमाया है बाबू, मैं सच कहता हूँ। मेरा खेत बारिश में सत्यानाश हो गया है, सारी ज़मीन में से पाँच मन गेहूँ निकला, हम आठ जीव खानेवाले हैं। मैं नंबरदार की बातों में आ गया। उसने मुझे बहका दिया कि यह ज़मीन मेरे नाम हो सकती है। पंचों के अँगूठे भी उसी ने लगवाए हैं।"[3] अगर उस लम्बरदार ने जाट किसान को अच्छे मूल्य सखाएं होते तो वह खुनके भाई पर अत्याचार करने जैसा कुकर्म नहीं करता। प्राकृतिक आपदा के कारण गरीब किसानों को अपने भौतिक मूल्यों के चलते, उसकी फसल, जो उसने इतनी मेहनत कर लगाई होती हैं, उसके खराब हो जाने के बाद, उसके सामने भुखे मरने जैसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती हैं। जिससे परेशान हो कुछ किसान

खेती करना ही छोड़ देते हैं और शहर जाकर कोई काम करना बेहतर समझते हैं।

3.1.3) मुर्गी की कीमत

इस कहानी में सरकारी कर्मचारियों द्वारा किया जाने वाला भ्रष्टाचार और निम्नवर्गीय लोगों पर होने वाले शोषण का चित्रण किया गया है। जिससे उनके अन्याय, निर्दयता, हिंसा, अमानवता जैसे अवमूल्यों का दर्शन हो जाता है। जहाँ चुंगीघर के चुंगीवालों द्वारा हर मुसाफिरों से उनके सामान के बदले महसुल बटोरा जाता था। वह भी उनसे जबरदस्ति करके। डॉट-डपट, मारपीट के ड़र की वजह से न चाहते भी, मजबूरन मुसाफिरों को महसूल देन पड़ता, ताकि वह उनसें बच पाए। जिनके पास देने के लिए पैसे न होते, यह चुंगीवालों को पता होने पर भी, वह उन्हें निर्दयता के साथ पीटते थे। जिससें उन्हें एक असुरी आनंद प्राप्त होता। एक कथन में अहमदू का हाल बया करते हुए कहां गया है कि,"अहमदू की नज़रों में वह एक साधारण इंसान नहीं बल्कि एक विशालकाय दैत्य था। अहमदू के हाथ काँप रहे थे, और इन्हें वह लोई के अंदर डालकर बार-बार अपनी तसल्ली करता था कि कहीं मुर्गी के कुड़कुड़ाने की संभावना तो नहीं।"[4] अहमदू जिसनें बडी मेहनत सें बारह आने कमाये थे। जिसमें से छह आने

की वह मुर्गी खरीद लेता है। ताकि, उससे जरूरत के वक्त फायदा उकेरा जाए, लेकिन चुंगीवालों से बचने के चक्कर में, उस मुर्गी के मरने की वज़ह सें उसका नुकसान होता तो है ही, पर उसी के साथ बचे छह आने भी, भुक-थकावट के मारे अहमदू से चलते न बनने के कारण, लारिवाले को देने पडे थे। अंत में अपने परिवार के लिए बचाकर लेजाने के लिए उसके पास कोई पैसे नहीं बचते। उसपर लाचार, बेबस, खाली हाथ घर जाने की नौबत उत्पन्न हो जाती है। जिससे उसे इतनी पीड़ा पहुचती है कि, वह बीलक-बीलक कर रोने लग जाता है। यह सब चुंगीवालों की वज़ह से होता है।

3.2) निस्वार्थ, सेवा भाव

3.2.1) अशांत रूहें

'भाग्य - रेखा' इस कहानी संग्रह की दुसरी कहानी 'अशांत रूहें' में मानवीय मूल्यों को टूटते दिखाने के साथ ही मूल्यों की सार्थकता को भी दिखाया गया है। आज के युग में जहाँ लोगों को खुदके रिश्तों को देने के लिए समय नहीं होता, वहाँ लेखक, जिस विचित्र,अनजान, आवारा आदमी को वह जानता तक नहीं ,उससे उसका कोई रिश्ता नहीं हैं, फिर भी इंसानियत के नाते उसकी बातों को सुनता हैं। जो भी वह अपने

जीवन/दफ्तर/अपने व्यवहार के संदर्भ में बताता हैं। जब वह खुद के उसूलों वाली जिंदगी जी रहा था। लेखक में एक दुसरे के प्रति आदर का भाव झलकता है। जो उन्हें पुरे धैर्य के साथ उसकी व्यथा सुनने पर बाध्य करता है। उस आदमी के समाज में बितें कटु अनुभवों सें समाज में छिपी कटुता, झलकती हैं। हर एक इंसान का अपना एक अलग जीने का तरीका होता है, जिसके चलते उस विचित्र व्यक्ति को समाज से अपमान सहन करना पड़ता था। जहाँ एक साधारण व्यक्ति इसी चीज की राह देखता हैं कि नौकरी में कब उसे प्रमोशन मिलेगा। पर वह आदमी निस्वार्थ भाव से मिली सीनीयर ग्रेड की सिफारिश को ठुकराकर दफ्तर में स्थित सभी लोगों के मजाक का पात्र बन जाता है। इसके पीछे का कारण यह था कि,वह दयानतदार और सत्यवादी रहने का कड़ा पालन करता था। जिससे उसकी आत्मा कलंकीत और वह बददयानत न हो जाए। जो उनके प्रस्तुत कथन से स्पष्ट हो जाता है कि, "जो आदमी दयानतदार है वह सुखी है। तेईस साल की मेरी सर्विस है। मैं दफ्तर में केवल दफ्तर का ही काम करता हूँ। कभी कोई अपना निजी ख़त भी आ जाए तो नहीं पढ़ता। दिन में केवल 3 मिनट के लिए रोज़ गुसलखाने में जाता हूँ, और हर शनिवार मैं 18 मिनट जियादह काम कर लेता हूँ, ताकि वह कमी पूरी हो जाए।"[5] इस कहानी में उसी विचित्र आदमी की अशांत रुत हैं

जिसे किसी भी चीज में शांतिया तसल्ली नहीं हैं। जो अपने हिसाब से अपना जीवन जीता था। एक मनुष्य के बर्ताव से आकर्षित होकर ही उसके आस-पास के लोग उसे अपनाते हैं। पर उस आदमी का व्यवहार इससे विपरीत था। वह अपने हिसाब से चिजों को रखना चाहता था, पर उससे लोग उससे दूर भाग रहे थे। इस सब के बावजूद सिर्फ़ उसके मोहल्ले के लोग उसको अपने स्वार्थ के चलते चाहते थे क्योंकि वह दो बजे उठकर पूरे मोहल्ले को धोता था। यानी जिससे फायदा मिलता है उसे सहेज कर रखना समाज की फितरत, उसका तरीका है। जब तक उसका फायदा मिलता हैं तब तक उसे झेला जाऐगा। फायदे के खत्म होने के साथ ही उस आदमी से मोहल्ले का लगाव भी खत्म हो जाऐगा। एक सामान्य आदमी जो ईमानदार है, उसमें बेईमानी निर्माण करने का प्रयास समाज द्‌वारा किया जाता है। पर जब वह समाज के हिसाब से खुद को नहीं बदलता, या समाज के हिसाब सें बर्ताव नहीं करता तो, समाज द्‌वारा ही उसका मजाक उड़ाना, उसे मानसीक यातना देने का काम किया जाता है।

3.3) सत्यनिष्ठा, संयम एवं ईमानदारी

3.3.1) गंगो का जाया

मानव मूल्य प्रस्तुतं इस कहानी में, जहाँ एक तरफ आर्थिक समस्या से गुजरता मनुष्य है तो दूसरी तरफ लालची, स्वार्थी मनुष्य। इस लालच, स्वार्थ के कारण आज का मनुष्य अमानवीय होता जा रहा है। इस कहानी का मुख्य पात्र 'गंगो' जो, मजदूरी कर मेहनत से अपना पेट भरती थी। यहाँ उसमें एक शिष्टाचार, सेवा भाव, सत्यनिष्ठा आदि मूल्य दिखाई देते है। लेकिन दूसरी ओर उच्च वर्ग का ठेकेदार है जो खुद के अंतर्गत काम करने वाली गंगो जो, गर्भवती होती है उसकी ओर दया का भाव रखे बगैर गालियां देकर काम छोड़ जाने को कहता है। जहाँ एक कथन में ठेकेदार कहता है कि," खड़ी देख क्या रही है? उठाती क्यों नहीं; जो पेट निकला हुआ था, तो आई क्यों थी? पहले पेट खाली करके आओ, फिर काम मिलेगा। क्षण भर में ठेकेदार का रजिस्टर खुल गया और गंगो के नाम पर लकीर फिर गई।" [6] इस दृश्य द्वारा इस बात को चित्रित करने का प्रयास किया गया है कि, एक गरीब मजदूर को नौकरी बचाने के लिए चुपचाप अपमान सहन करना पड़ता है। उन्हें एक गरीब मजदूर के हालात से कुछ लेना-देना नहीं होता और ना ही उसके लिए उसके मन में कोई सहानुभूति होती है। वह सिर्फ गरीब से भेड़ बकरों की तरह काम करवा कर लेना जानते हैं। ठेकेदार का व्यवहार स्पष्ट करता है कि, वर्तमान समय में आदमी निर्दई होता जा रहा है। जहाँ इंट और पत्थर का मकान

उसकी नज़र में मनुष्य से भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया हैं। आज कल इंसानों ने स्वार्थ के आगे इंसानियत के सारे रिश्ते भुला दिए हैं। छह वर्ष का घीसू का बेटा, रीसा द्वारा मजबूरन बुट पॉलिश करने के काम पर जाने पर, गलती करने पर उसे समाज से मिले उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। जैसे लोगों द्वारा चाटा मारना, पैसे न देना आदि व्यवहार उस छोटे बच्चे के साथ लोगों द्वारा किया गया। जिससे इस वर्ग की वृत्ति का पता चलता है। यहाँ दो वर्गों को दिखाया गया है:- एक जो कष्ट करता है रोटी कमाने के लिए और दूसरा जो पैसों के बल पर जीता है। 'प्रेम' भाव को भी कहानी में समान रूप से दर्शाया गया है। जहाँ एक माता-पिता(गंगो-घीसू) का अपने छोटी उम्र में काम करने वाले बेटे (रीसा) के प्रति प्रेम और चिंता का भाव दिखाई देता है। आर्थिक समस्या के चलते, गरीब मजदूरों को, मजबूरी के कारण अपने बच्चों को काम पर भेजना पड़ता है। ताकि वह अपने परिवार को दो वक्त की रोटी नसीब करा पाए। रीसा के गुम हो जाने पर जिससे उसके माता-पिता को दुख तो होता है पर दूसरी तरफ संतुष्टि भी थी कि अब खाने वाले कम हो गए थे। इस कहानी के बारे में मनोज कुमार सिंह लिखते हैं कि,"कहानी कलेवर में छोटी, रचाव में कलात्मक और प्रभाव में मार्मिक है। मज़दूर जीवन की जिस विडम्बना और तनाव को हमारे सामने उपस्थित करते हैं

उस तनाव और विडम्बना का दारुण विस्तार आज और अधिक होता जा रहा है। ग़रीबी इन्सान को कितना बेबस, स्वार्थी और अमानवीय बना देती है।"[7] इस कहानी में गंगो और उसके गरीब परिवार के हर सदस्य में धैर्य और शांतता पूर्वक होने का गुण स्थित है, तो दूसरी तरफ उच्च वर्ग भी है जो हिंसा, अन्याय जैसा व्यवहार लिए चलते हैं।

3.3.2) शिष्टाचार

'भाग्य-रेखा' इस भीष्म साहनी के कहानी संग्रह की 'शिष्टाचार' कहानी में एक गरीब नौकर की उसके मालिक के प्रति प्रमाणिकता, दृढ़ता, आदर्शता के मूल्यों को चित्रित किया गया हैं। उसी के साथ मध्यवर्ग के खोखले शिष्टाचार और बढ़प्पन का भी चित्रण कहानी में किया गया है। जहाँ " मूल्यों" को "अवमूल्यों" के नीचे कुचला दिखाया गया हैं। इस कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं,श्री रामगोपाल, असकी पत्नी और (नौकर) हेतु। उनका नौकर जिसके इर्द गिर्द यह कहानी चलती है। जो अनपढ़, कुरूप, कम पैसों में काम करनेवाला है। जिसे श्री रामगोपाल और उसकी पत्नी घर में काम पर तो रख लेते हैं, पर उसपर वह विश्वास नहीं रखते थे और हर वक्त उसकी ओर शक की नजरों से देखते फिरते थे। कि कही वह कुछ चोरी ना कर ले। श्री रामगोपाल की पत्नि तो उस बिचारे नौकर की हर

हरकत पर नजर रखने लगी थी और उसकी ओर हीन, चोर, गवार की नजरों से देखती। इस कहानी में मध्यवर्ग की, गाँव से आए गरीब की ओर उनकी सोच को चित्रित किया गया है। लोगों की सोच उनको लेकर इस प्रकार की हो गयी है कि, वह गरीब हैं तो वह घर में हाथ साफ करता फिरेगा, लालची होगा। उसकी उनके नजरों में कोई इज्ज़त नहीं होती। जब हेतु पुरे आदर भाव, शांतिपूर्वक छुट्टी मांगता हैं, वह भी जलसे के दिन तो वह अपने खोखले शिष्टाचार को दर्शाते हुए, सोचने लगते हैं कि उसने कई चीजों पर अपना हाथ साफ किया होगा इसलिए वह छुट्टी मांग रहा है, पर वह यह नहीं सोचते कि उस छुट्टी के पीछे उसकी कोई मजबूरी होगी जिसे वह छुपा रहा हो। मध्यवर्ग हो या उच्च वर्ग, गरीब लोगों द्वारा काम की खोज में आने पर, तब उनकी तरफ देखने का उनका नज़रीया अभी तक नहीं बदला है और ना ही शायद कभी बदलेगा। हेतु द्वारा उनके घर में ईमानदारी, दृढता, धैर्य, कर्तव्यपरायण जैसे मूल्यों के साथ तीन साल काम करने पर भी वह उनके मन में विश्वास निर्माण करवा नहीं सका था, इसी कारण उसे जलसे के दिन छुट्टी ले गाँव जाने के बात पर बहुत अपमानीत किया जाता है। जहाँ एक जानवर को कई साल तक पालने पर हमारे मन में उसके प्रति एक तरह का लगाव, अपनापन, विश्वास निर्माण हो जाता है

पर, इस कहानी में श्री रामगोपाल का परिवार हेतु को अपने साथ तीन साल साथ रखने पर भी उसपर विश्वास, उसे अपना नहीं पाते और उसको काम से निकाल देने के बाद, पल भर में उसें एक वस्तु की तरह भुला देते हैं। यह श्री रामगोपाल, उसकी पत्नी द्वारा किए इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि," 'तुमने उसे जाने क्यों दिया ? कभी कोई नौकरों को यूँ भी जाने देता है? अब मैं क्या जानूँ क्या-क्या उठा ले गया है?'

'जाएगा कहाँ, उसकी तीन महीने की तनख्वाह मेरे नीचे है।'

'वाह जी, सौ-पचास की चीज़ ले गया तो बीस रूपए तनख्वाह की वह चिंता करेगा??'

'तुम अपनी चीज़ों को अच्छी तरह देख लो। अगर कोई चीज़ भी गायब हुई तो मैं पुलिस में इत्तला कर दूँगा। मैंने उसका पता-वता सब लिख लिया है।" [8]

श्री रामगोपाल को छुट्टी के पीछे का सच पता चलने पर उन्हें अफ़सोस होता तो है पर उसके साथ, इस बात का भी एहसास हो जाता है कि, हेतु ने मांगी छुट्टी के पीछे उनका ही हित छिपा था। जो श्री रामगोपाल और हेतु के इस संवाद सें स्पष्ट हो जाता है कि,"जी मेरा बच्चा मर गया था,' लड़खड़ाती हुई आवाज़ में हेतू ने कहा।

बाबू रामगोपाल को सुनकर दुःख हुआ। थोड़ी देर तक चुपचाप खड़े उसके मुँह की ओर देखते रहे, फिर बोले, 'मगर तुमने उस वक़्त कहा क्यों नहीं? तुमसे बार-बार पूछा गया मगर तुम कुछ भी न बोले?

हेतू ने धीरे से कहा, 'जी, वहाँ कैसे कहता?'

'क्यों?!

'खुशीवाले घर में यह नहीं कहते। हमारे में इसे बुरा मानते हैं।" [9]

इस कहानी में एक तरफ वह मध्यवर्ग के या उच्च वर्ग के लोग हैं जो सिर्फ खुद के बारे में, खुद के फायदे के बारे में ही सोचते रहते हैं, तो दूसरी तरफ वह गरीब हैं जो इमानदार रहने का धेय रखता हैं। हेतु परिवार के हित के बारे में सोचकर, अपने दुख को छुपाकर रखता है। उच्च या मध्यवर्ग का व्यवहार किस तरह उनके जरूरत के हिसाब से बदल जाता हैं इसका चित्रण इस कहानी में किया गया हैं। यह वर्ग पढ़ा-लिखा होने के बावजूद अनपढ़ की तरह अपना व्यवहार रखता है और किसी को नौकर रखना यानी, उसे एक खरीदी दुई चीज समझकर उसके साथ वैसा व्यवहार भी किया जाता है।

3.4) निडरता

3.4.1)अनोखी हड्डी

इस कहानी में मूल्यों को टूटते/ बिखरते दिखाया गया है। जब किसी पर लालच सवार हो जाता है तब उसे किसी के जान तक की परवाह नहीं रह जाती। वह खुदगर्ज बन जाता है। वही काम स्वर्ण देश का राजा, एक सुंदर प्रदेश की लालसा में करता है। उस प्रदेश को पाने के चक्कर में, वह उस प्रदेश के सौंदर्य को लगभग खत्म ही कर देता है। जिस झील में उस प्रदेश के नागरिक जीवन यापन के चलते मछलियां पकड़ते थे, वही झील युध्द के कारण उन्हीं के खून से लाल बन चुकी थी। खुशाली भरे प्रदेश में मातम छा गया था। राजा के आक्रमण से प्रदेश की खुशियां बर्बाद हो चुकी थी। लालच और स्वार्थ के कारण राजा को उस बात का एहसास भी न था। अपने बड़प्पन को झाडने के लिए वह एक वृध्द की सहायता करने के लिए राजी हो जाता है, लेकिन राजा के पूरे राज्य का धन भी वृध्द ने लाई उस हड्डी के वजन के सामने टिक नहीं पाता। एक बूढ़े आदमी ने लाई हड्डी द्वारा राजा का झूठा अभिमान चूर चूर होने की नौबत आ जाती है, तो वह अपना यह अपमान सहन नहीं कर पाता। कहानी में एक कथन है कि,"याचक की प्रार्थना भले ही छोटी हो, पर दानी के दान में उदारता होनी चाहिए"[10] जब एक बूढ़ा आदमी, राजा से, नाखून जितनी छोटी सफ़ेद हड्डी के वज़न जितना स्वर्ण दान मे मांगने

आता है। तब राजा को वह बहुत तुच्छ बात लगती है, लेकिन उसी हड्डी के वजन का स्वर्ण जमा करते-करते अंत में राजा के पसीने छूट जाते है क्योंकि वह कामना की हड्डी थी जिसकी प्यास हमेशा बढ़ती रहती है, बुझती नहीं। जो चिन्ह था राजा के कामना पूर्ण लालच का। अतः यह दृश्य राजा को सही राह दिखा,उसे अपनी गलती का एहसास कर हीं देता है। जिससे स्पष्ट हो जाता है कि, स्वार्थ, लालच के चलते कोई किसी का भला नहीं कर सकता। बल्कि उसके विपरीत अहित ही होता है। दूसरों का बुरा करके सिर्फ असूरी आनंद प्राप्त किया जा सकता है। संपत्ति का बड़प्पन किसी पर इस तरह हावी हो जाता है कि वह अपने अंदर की मानवता को ही भूल जाए और सिर्फ खुदके स्वार्थपुर्ती में लग जाए। अपने अंदर की मानवता भूल जाने पर, अन्य व्यक्ति द्वारा, उस व्यक्ति को खुदमे स्थित मानवता याद दिलाने की नौबत आन पहुची है। जिसके चलते अंत में राजा को अपनी गलती की एहसास हो ही जाता है।

<u>3.5) प्रेम एवं मानवता</u>

3.5.1) तमग़े

'तमग़े' इस कहानी में मानवीय मूल्यों को बीखरते दिखाया गया हैं। इसी के साथ जंग में लडने वाले फौजी का जीवत तथा उसका परीवार और

फौजी जिन यातनाओं से गुजरता है उसे दर्शाया गया हैं। यह कहानी 'मैं' शैली में लिखी गयी हैं। जिसमें लेखक, एक फौजी और उसकी माँ के प्रेम, धैर्य, ममता इन मूल्यों सें युक्त हालत को व्यक्त कर उनसे जुडी अपनी कहानी बता रहा हैं। इस कहानी का मुख्य पात्र राजो धोबन और उसका फौजी बेटा मीरजमान हैं। जो एक शरारती लड़के से सीधे फौजी बन गया था। एक माँ का अपने फौजी बेटे को जंग पर खो देने के ड़र को कहानी में दर्शाया गया है। जिस बेटे के सलामती के लिए उसकी माँ ज्यादा से ज्यादा पुण्य का काम करती हैं। जैसे राजो दिन में पाँच बार नमाज पढ़ती, अन्य बच्चों को दुवायें देती, कपडे धोने का काम करती। जब उसे पता लगता है कि, उसका बेटा जंग से लौटनेवाला हैं और तमग़ा देकर उसका सम्मान किया जाएंगा, तो वह बहुत खुश हो जाती है। लोग भी कहते हैं कि,'इंसाफ देखा है तो अंग्रेज़ का। धोबन के बेटे को सरकार तमगा देगी।" [11] पर बाद में खुशी से ज्यादा दुख, उसे अपने बेटे को अपाहिज देख होता हैं। जिसके बाद मिले तमगे को उसकी माँ द्वारा बच्चों को खेलने दे दिया जाता हैं। जो उनके हिसाब से अनावश्यक सा था, जिसे अंग्रेज सरकार ने अपनी जान बचाने के बदले में दिया था। खुदके बड्प्पन का प्रदर्शन कराने के लिए। यहां यह दिखाने की कोशिश की है कि, अंग्रेज सरकार जैसे अन्यायी, निर्दई, स्वार्थी बड़े लोगों के लिए

एक फौजी के त्याग का कोई महत्व नहीं होता। तमग़ा देने के बजाय, वह उन अपाहिज, असहाय फौजियों को उनका बचा-कुचा जीवन व्यतीत करने के लिए कोई विशेष व्यवस्था प्रदान कर सकते थे पर उतना भी उनके लिए नहीं किया जाता। उसके जगह होता तो हैं सिर्फ दिखावा। बड़प्पन बटोरने के लिए। असहाय फौजी मीरजमान को समाज के अमानवता के चलते, मानसिक, शारीरिक यातनाओं से गुजरना पड़ता हैं। जिस वक्त उस फौजी को, जंग से असहाय अवस्था में लौटने पर अपने परीवार, समाज के अपनेपन और सहारे की जरूरत होती हैं वही समाज उस फौजी को तकलीफ़ देता, खुदको बोझ मानने पर मजबूर कर देता हैं। जैसे मीरजमान को गली के बच्चों ने परेशान कर रखा था। इसके संदर्भ के लेखक कहते हैं कि,"लड़के राजो के घर के सामने आ खड़े हुए, और दरवाजे में से झाँक-झाँककर मीरज़मान को देखने लगे, जो जूँ का तू खाट पर बैठा था, जो न हिलता, न जुलता, न बोलता, न हँसता, न रोता था। पहले तो लड़के उस पर झाँकते रहे, फिर छेड़ने लगे। कोई दरवाजे पर खड़ा होकर उसे पुकारता, कोई दीवार पर चढ़कर। फिर वह और भी लापरवाह हो गए। दो-एक ने तो छोटे-छोटे कंकड़ भी मीरज़मान पर फेंके। जिस पर राजो अपनी कोठरी से भागती हुई बाहर निकल आई। उसे देखकर लड़के भाग गए। मगर उन्हें एक नया खेल मिल गया। बार-बार

वह लौटकर आते, और छिप-लुककर, कभी दरवाजे पर से, कभी दीवार पर से मीरज़मान का नाम पुकारते, और जब राजो सामने आती तो वह भाग जाते।" [12] जो राजो के माँखों में बहुत चुबता था । कोई भी माँ अपने बेटे के दुख पर किसी को हँसते हुए नहीं देख सकती हैं। इस कहानी में एक फौजी की पीडा झलकती है, उसी के साथ उसके परिवार की उसको लेकर चिंता और दुख भी व्यक्त होता हैं। जिसमें से वह कई जतन कर नीकल पाते हैं। एक फौजी के मेहनत, उसके दुख, को एक आम आदमी नहीं समझ सकता।

3.5.2) घर-बेघर

'घर-बेघर' कहानी में मूल्यों को बीखरते दिखाने के साथ ही मनोवैज्ञानीक समस्या को भी दर्शाया गया है। जीसमें एक पागल औरत जो किसी के भी बच्चे को उठाकर अपनी कोठडी पर ले जाती थी। वहाँ उसको खीला, पिलाती, उसका दुलार करती। पर अगर उस बच्चे के माँ-बाप उसे लेने आते तो वह उन्हें काटने और उनके बाल नोचने दौड़ती। इसी पागल औरत को लेकर थानेदार का कथन है कि," इस औरत ने नाक में दम कर रखा है। हर तीसरे रोज इसकी शिकायत आती है। न मैं इसे जेल में ठूँस सकता हूँ, न खुला छोड़ सकता हूँ। इस नामुराद को बच्चे उठाने की

इल्लत है। जहाँ कहीं इसे कोई बच्चा अकेला घूमता हुआ मिल जाए, उसे उठा लाती है। बस, इसे यही जनून है।"[13] यहाँ एक स्त्री की ममता,प्रेम, अपनापन भावनाओं, मूल्यों को व्यक्त किया गया है। उसीके साथ थानेदार की क्रूरता, अधिकार, अमानवता, निर्दयता, हिंसा जैसे अवमूल्यों को दिखाने की कोशिश की गयी है। जो उस पागल औरत से छुटकारा पाना चाहता हैं। कई बार उसने उस औरत को उस कोठडी से बाहर निकालने की कोशिश तक की। हर बार जब वह बच्चा चुरा लाती तो वह हवालदार से कह उस औरत को दो कौडे लगवाता। मनुष्यता के नाते उस थानेदार ने इस बात पर कभी ध्यान नहीं दिया कि शायद उस पागल औरत के ऐसा करने के पीछे कोई कारण होगा। उसने कभी उस औरत के लिए दया भाव नहीं रखा। बल्कि उसी के चरित्र पर प्रश्न चिह्न लगा दिया,जब एक लफंगे, अधेड उम्र के आदमी को उसकी कोठडी के बाहर रात दिन घूमते पाया गया। थानेदार उस आदमी, परसराम पर उस पागल औरत का प्रेमी होने का शक करके उन दोनों का अमानवतापूर्वक मजाक उडाता है। यहाँ बड़े लोगों द्वारा गरीब पर होने वाले शोषण को दिखाया गया है। उससे उनके मूल्य झलकते हैं। उसीके साथ भीष्म साहनी ने अंजान लोगों में बनते-बिगडते रिश्तों को भी इस कहानी में बखुबी चित्रत किया हैं। जो रिश्ता पागत औरत, उस अधेड उम्र के आदमी परशुराम

और पाँच साल के बच्चे में बनता है। जो एक दुसरे को जानते तक नहीं थे। वह अनजान आदमी यानी परसराम, मंडी में मीलें बच्चे की सत्यनिष्ठा, जिम्मेदारी सें, प्रेमपूर्ण, खुदके बच्चे की तरह उसकी फीक्र करता था। उसका खयाल रखता था। जहाँ वर्तमान समय में लोग अपने सगे रिश्तों की परवाह नहीं करते वहाँ एक अनजान आदमी खुद का कोई ठिकाना न होने के बावजूद उस बच्चे का खुदके बच्चे जैसा खयाल रखता था। उसकी फिक्र करता था। उस बच्चे का जीवन अच्छी तरह बीते उसके लिए वह उसे उस पागल औरत के पास रखने के लिए भी तैयार हैं। उन तीनो में कोई रिश्ता न होने के बावजूद वह अपने मानवता सें बने रीश्ते को बचाने की कोशीश करते हैं। अपनी दयनीय स्थिति में भी मनुष्य अपने रिश्तों को बनाये रखने की कोशिश करता हैं। वह अपने रीश्तों के लीए कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता हैं। थानेदार द्वारा उस पागल औरत और उस अधेड उम्र के आदमी यानी परसराम को बेइज्जत करने के बाद भी वह दोनों उसके खिताफ कुछ भी नहीं कह पाते। सिर्फ उसी कारण की वजन में कि वह गरीब है और उनकी यह सोच बन चुकी हैं की बड़े लोगों से डरना चाहिए तभी वह उनसे बच पाएंगें। अपने अच्छे व्यवहार के चलते परसराम, वह पागल औरत और वह बच्चा, उनकी

वजह से दूसरों को तकतीफ़ न हो इसलिए अंत में वह इलाका छोड़ चले जाते हैं। पर इसका थानेदार पर कोई फरक नहीं पड़ता।

3.6) दृढ़ता

3.6.1) क्रिकेट मैच

'क्रिकेट मैच' इस कहानी में दांपत्य जिवन के मूल्यों के बिखराव को दिखाया गया है। जहाँ सारे लोग क्रिकेट मैच के तीसरे दिन से उब गए हैं, तो पुष्पा सब से परे अभी भी पुरे उत्साह के साथ मैच खेलनेवालों को बढ़ावा देती चहक रही थी। इस कहानी में एक दंपती के दोनों सदस्यों के व्यवहार में अंतर को दिखाया गया है। जहाँ पत्नी खुदकों अपने पति के हिसाब सें बदलने की कोशिश कर रही हैं। लेकिन पुष्पा के पति रमेश को उसकी वह मेहनत नहीं दिखाई दे रही थी। वह मैच में भी पुष्पा को छोड़कर दुसरी स्त्री से मोहीत होकर उसके साथ बात करने चला जाता हैं। वह अपनी पत्नी के भावनाओं के बारे में नहीं सोचता। तो दुसरी तरफ एक पत्नी हैं जिसे वह देख बुरा तो महसूस होता हैं पर उस दुख को दिल में दबा, वह खुदकों खुले विचारों की दिखाने की कोशिश करती हैं। इस संदर्भ में पुष्पा कहती है कि,"इन्हें लड़कियाँ बहुत चाहती हैं। हमारी क्लब में भी अगर यह एक रोज़ नहीं जाए तो वह शिकायत करने लग जाती

हैं। इनके पास लड़कियों को मोह लेने का कोई जादू है।" [14] इस दृश्य से यह स्पष्ट हो जाता हैं कि, एक ओर स्त्री, पुरूष को अपने साथ बांधे रखना चाहती हैं तो दुसरी ओर पुरुष, स्त्री के उस बंधनों से छुटकारा पाना चाहता हैं।

3.6.2) भाग्य-रेखा

इस कहानी में मजदूर की व्यख्या के साथ-साथ मूल्यों को चित्रित किया गया है। जिसमें एक दमें से ग्रस्थ मजदूर कनॉट प्लेस में एक जोतिषी को अपना हाथ दिखाता है। जो उस मजदूर को अपने धंधे की भाषा में भाग्य बताता, जो वह मजदूर का मन बहलाने के लिए यह सब करता है। पर मजदूर उसके झुठ को भापकर, वह ज्योतिषी को सच कहने पर मजबूर कर देता है। जिसपर ज्योतिषी द्‌वारा उसकी भाग्य- रेखा न होने के बारे में बताने पर मजदूर उस पर विश्वास नहीं करता। बल्कि वह मई दिवस पर आयोजित मजदूरों के जुलुस को देख खुदके भाग्य को जान जाता है। "यह एक प्रगतिशील कहानी हैं।" जहाँ मजदूरों की व्यथा, उनके दुख को व्यक्त किया गया है। एक कथन में वह मजदूर बताता हैं कि," मशीन से कट गई। अब मैं नई उँगलियाँ कहाँ से लाऊँ। जहाँ जाओ मालिक पूरी दस उँगलियाँ माँगता है,' कहकर हँसने लगा।" [15] जिस वजह

से उस मजदूर की हालत दुखद बन गई है। इस कहाँनी में आर्थिक समस्या से पीड़ित मजदूर को दूसरों पर बोझ बनकर जीने पर मजबूर होना पड़ता हैं। वह मजदूर ज्योतिषी ने बताए भाग्य पर विश्वास नहीं करता। पर- मजदूरों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर दिवस पर निकाले गए जुलूस में बढ़ते मजदूरों की संख्या और उन की एकता को देख कर मजदूरों के भविष्य को लेकर एक आस उसमे जगी दिखती है। वह मजदूर, मजदूर न होकर उस जुलूस का एक सदस्य है। जो अपने ऊपर हुए अन्याय से ज्यादा उसके खिलाफ आवाज उठाने वाला है। नित्यानन्द तिवारी 'भाग्य -रेखा' कहानी के संदर्भ में लिखते हैं कि," ऐसा लगता है वह मजदूर परिस्थिति के भीतर बना आदमी तो नाममात्र को है, विचारधारा से ही गढ़ा गया है। परिस्थिति, व्यक्ति और विचारधारा के अन्तर्विरोध और द्वन्द्व के बिना ही यह कहानी प्रगतिशील हो गयी है।" [16] यह कहानी उन मजदूरों पर है जो अपनी पूरी जिंदगी मजदूरी कर गुजार देते हैं। आजकल लोग अपनी क्षमता और किस्मत पर कम और भाग्य बता ने वालों पर ज्यादा विश्वास रखते है। इसके विपरीत इस कहानी के मुख्य पात्र को दिखाया गया है।

3.7) धैर्य

3.7.1)घर की इज्जत

भीष्म साहनी के 'घर की इज्जत' इस कहानी में परीवार में टूटते-बीखरतें मूल्यों को दिखाया गया हैं। जहाँ परीवार में बनाए गए नियमों और प्रतिष्ठा के चलते, एक स्री का खुले मन से जीना मश्किल बन जाता, स्री की चंचलता को मिटाकर उसे पुरुष द्वारा बनाए नियमों के हिसाब से जीने के लिए बाध्य किया जाता है। इस कहानी में निहीत पांचो बहुएं अपने हिसाब से जीना चाहती थी, लेकिन उनके पतियों द्वारा उन पर पावंदिया लगाने पर, धमकाने पर, वह स्रीयाँ अपने पतियों के हिसाब से जीने पर मजबूर होकर, एक कठपुतली की तरह उनका बर्ताव हो जाता है। कई तानों का सामना भी उन्हें करना पड़ता है, पर वह चुपचाप उन्हें सहती आगे बढ़ती, अपने दुस्साहस पर पछताती हैं। आजकल संयुक्त परिवारों में दरार उत्पन्न हो रही है, वही इस कहानी का परिवार एकता कायम रख पाया था। इन सब का एक ही कारण था वह है उनके अंदर छिपी रुढ़िवादी अमानवीता। जो उनके व्यवहार को हीन बना रही थी। जहाँ बहू को हर काम के लिए रोका-टोका जाता, सभी भाईयों द्वारा उनकी पत्नीयों को मुट्ठी में रखा जाता था। आज के पितृसत्तात्मक युग में कुछ घरों के बडों द्वारा, अपने छोटो को स्त्री को काबू में रखने की सलाह दी जाती है। इन गलत संस्कारों के चलते उनमें स्री को लेकर वह

निर्दयता पनपने लग जाती है। परिवार में मर्यादाओं के नाम पर एक स्त्री को नियमों से बांध कर रखा जाता है। इस कहानी में दो व्यक्तियों, दो अलग लिंगों के बीच भेद-भाव के उस व्यवहार को, अवमूल्यों का निर्माण होते दिखाया गया है। जहाँ परिवार के बड़े बेटे द्वारा, उसके अन्य भाईयों को अपनी-अपनी पत्नीयों को अपने काबू में रखने और उनसे उनकी स्वतंत्रता को छीनने की आज्ञा दी जाती है। जिसका वह निर्दयता, अन्यायपूर्वक पालन करते हैं। जहाँ परिवार के बेटों को गैर लड़कियों द्वारा प्रस्तुत नाटक देखने का हक था, पर जब उसी परिवार के बहू को, उसी नाटक में पार्ट लेकर, उसे खेलने का शौक हो जाए तो उनके लिए अलग नियम निर्माण हो जाते थे और उसी के साथ परिवार की मर्यादा टुटने का भय भी उत्पन्न हो जाता था। खुद पुरुष होने के नाते, अपने लिए कोई पावंदिया /नियम निर्माण नहीं किए गए थे। वह सिर्फ एक स्त्री को काबू में कैसे रख सकते है उसी के बारे में सोच रहें थें। "घर के सब लोग, पाँचों भाई नाटक-सिनेमा देखने के शौकीन थे। बड़े भाई तो ऐसे कई अधिवेशनों पर सभापति पद पर भी बैठ चुके थे। पर वह तब था जब और घरों की लड़कियाँ पार्ट कर रही हों; जब वह स्वयं दर्शक हों, कला के प्रशंसक। जब उनकी अपनी बहू को पार्ट खेलने का शौक हो आए तो धर्म-नियमावली बदल जाती थी, और कुल की मर्यादा टूटने का भय

उठ खड़ा होता था।" [17] जिसकी प्रतिक्रीया में कोई भी बहू उनका विरोध करने का साहस नहीं जुटा पा रही थी। पुरुष द्वारा स्त्री को इतना मजबूर बना दिया जाता है कि, वह अपने इच्छाओं को मारने के लिए तुरंत ही तैयार हो जाती है। अगर स्त्री-पुरुष, दोनों को अल्पायु में ही समानता की सीख दि जाए तो शायद इस कहानी में निहित कुछ पात्रों की तरह उनकी मानसिकता न बनती और हर एक को उसका वैयक्तिक स्थान प्राप्त हो पाता। आज के युग में स्त्री इतनी सशक्त हो चुकी है कि, वह पुरुष द्वारा बनाए गए, उनके लिए नियमों के विरुद्ध जीने की हिम्मत रखती है। इस कहानी के अंत में भी स्री की सशक्तता को दिखाया गया है। जहाँ छोटी बहू को नाटक में हिस्सा लेने से इनकार करने पर । वह पहले तो टुट जाती है पर, बादमें धैर्य के साथ चोरी छिपे ही सही, पर नाटक में हिस्सा लेने, बिना किसी को बताए चली जाती हैं।

3.7.2) ऊब: -

भीष्म साहनी के 'भाग्य-रेखा' कहानी संग्रह की ऊब कहानी में 'धैर्य' इस मूल्य की प्रधानता को दिखाया गया है। एक अध्यापक एंव चपरासी को पाठशाला में घटीत परिक्षा के समय या फिर किसी कार्यक्रम के समय कितना ही समय खडा रहना, दौड-भाग करना पड़ता है। जिससे वह ऊब

भी जाते है, पर जिम्मेदारी, मजबूरी और अनुशासन के चलते आराम तक नहीं कर पाते। ऐसे ही एक अध्यापक का परिचय इस कहानी द्वारा दिला गया है। जिसे विधाता ने ऊब का वर्दान दिया था। ताकि इस ऊब के चलते उसके अंदर की चंचलता खत्म हो जाए और वह सबसे अच्छा अध्यापक बने।

3.7.3) नीली आँखे

भीष्म साहनी इस कहानी के लेखन के संबंध में कहते हैं कि," ऐसा हुआ कि मैं उन दिनों रावलपिण्डी में था। अपने पिता के साथ व्यापार में काम करता था। एक दिन लौटते वक्त एक घटना घटी। भीड़ एकत्र थी। भीड़ के बीच एक लड़की घिरी खड़ी थी। पास ही एक अस्पताल था जिसके बरामदे पर एक बीमार युवक बैठा था। दोनों मेहनत-मजदूरी करनेवाले थे। गाँव से भागकर आए थे। लड़की के लिए सिर छुपाने लायक जगह नहीं थी। भीड़ में से कुछ छेड़-छाड़ कर रहे थे। मैं भी खड़ा हो गया। इस घटना को लेकर'नीली आँखें' कहानी लिखी। अमृतराय ने 'हंस' में उसे छापा।"[18]

भीष्म साहनी के 'नीली आँखे' कहानी में मानवीय मूल्यों का बीखरना / टुटना, समाज के निर्दई रूप को प्रस्तुत करने के साथ-साथ कहानी में

आर्थिक समस्या को भी चित्रित किया है। उसी के साथ खुद को सभ्य कहनेवाले लोगों के संकीर्ण और गिरे हुए विचारो, बातों और भावनाओं का वर्णन है। जहाँ एक लड़का और लड़की गाँव से भागकर मजदुरी करने शहर आते हैं। जहाँ वह शादी भी करतें हैं। पर लड़का बीमारी से त्रस्त अस्पताल में शरण ले लेता हैं। लेकिन लड़की को बेबस, लाचार होकर, पैसे न होने और रहने के लिए कोई जगह न होने की वजह सें शहर भर भटकते फिरना पड़ता है। आज के समाज में, ज्यादातर शहरों में जहाँ कही कोई अकेली लड़की दिखी नहीं की कुछ लफंगो द्‌वारा उसे छेड़ना, परेशान करना शुरू हो जाता हैं। एक मनुष्य को इस संसार में जीने के लिए किसी के सहारे की जरूरत लगती हैं। उसी तरह की जरूरत उस लड़की को उसके पति की थी, जो अस्पताल में बीमार पड़ा था। एक कहावत है कि, "रक्सी जल गयी पर बल नहीं गया" यही हालत उस लड़के की थी। उस लड़का/लड़की की इतनी दयनीय हालत हो जाने के बावजूद, वह खुदकी पत्नी, एक स्री ने मांगा खाने से इनकार कर देता है पर, वह खुद लड़की को उसे छोड़कर जाने से रोकने के लिए लोगों द्‌वारा दि गई भीक को स्विकार कर अपनी पत्नी के हाथों में थमाने से नहीं हीचकता। समाज के कुरूप रूप का दर्शन भीष्म साहनी ने इस कहानी में बखुबी कराया है। किस तरह लोग अमानवीय बन, अपनी तमीज को

भुलकर, एक बेसहारा, गरीब के मामले में अपनी टांग अडाने पहुंच जाते हैं। उनका उनसे कोई लेना देना न होने के बावजूद। इस व्यवहार को देख लोगों के संस्कारों को पता चल जाता है। इसी तरह का व्यवहार घर से भागे, शहर में आकर मजदूरी कर अपना जीवन यापन करनेवाले उस लड़का-लड़की के साथ लोगों द्वारा किया जा रहा था। अकेली लड़की द्वारा शहर में भटकते हुए जीना, मुश्किल होता जा रहा था। जिससे थक हारकर वह लड़की उस जगह से चली जाती हैं, और यह होता वह बीमार, अपनी हालत से मजबूर लड़का देखता रह जाता हैं। लड़का अपनी पत्नी की हालत के बारे में नहीं सोचता। बल्कि खुदगर्ज भावना मन में रख सिर्फ खुनके सहारे की चिंता उसे सता रही थी। घर से भागे युवकों को लेकर समाज की बनी सोच आज भी वैसी की वैसी कायम है। उस लड़का-लड़की के चरित्र पर लोगों द्वारा सवाल उठाए जाते हैं, कटु बातें कही जाती हैं, जिन्हे झेलने के बजाय उनके सामने कोई उपाय नहीं बचता। आज के युवाओं को लगता है की, वह घर से भागकर शहर जाकर, कोई काम करके, आसानी से अपना जीवन जी लेंगें । पर उनको जीतना वह आसान दिखता हैं वह उतना आसान नहीं होता। जिस वजह से इस कहानी के तड़का-लड़की की तरह फीर उन्हें समाज की कटुता को झेलना पड़ता हैं। गाँव या अन्य किसी जगह से शहर आए लोगों के साथ

शहरवालों के व्यवहार को भी चित्रित किया गया है। आर्थिक समस्या के चलते मजदूरी करना, लोगों से मांगकर जीवन यापन करने पर मजबूर होना पड़ता हैं।

<u>संदर्भ:-</u>

1) भारती धर्मवीर, मानवीय मूल्य और साहित्य, मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी प्राकाशक, प्रथम संस्करण: - 1960.ई, पृष्ठ. क्र:- 24

2) साहनी भीष्म, भाग्य रेखा, प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली, पहला संस्करण: 1953, पहला राजकमल संस्करण: 1997 पृष्ठ क्र. 11

3) वही,पृष्ठ क्र: - 111

4)वही ,पृष्ठ क्र: - 62

5) वही पृष्ठ क्र: -25

6) वही पृष्ठ क्र: - 81

7) राय हरियश, भीष्म साहनी सादगी का सौन्दर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 2020, पृष्ठ. क्र:- 314- 319

8)साहनी भीष्म, भाग्य रेखा, प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली, पहला संस्करण: 1953, पहला राजकमल संस्करण: 1997 पृष्ठ क्र: - 34

9) वही पृष्ठ क्र: -35

10) वही पृष्ठ क्र: -39

11) वही पृष्ठ क्र: - 46

12)वही पृष्ठ क्र: - 50

13) वही पृष्ठ क्र: - 96

14) वही पृष्ठ क्र: - 56

15) साहनी भीष्म, भाग्य-रेखा, प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली, पहला संस्करण: 1953, पहला राजकमल संस्करण: 1997 पृष्ठ क्र: - 90

16) राय हरियश, भीष्म साहनी सादगी का सौन्दर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 2020, पृष्ठ. क्र:- 264

17) साहनी भीष्म, भाग्य-रेखा, प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली, पहला संस्करण: 1953, पहला राजकमल संस्करण: 1997 पृष्ठ क्र: - 117

18) साहनी भीष्म, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 1996, पृष्ठ क्र: - 69

चतुर्थ अध्यायः भाषा शैली

4.1) भीष्म साहनी की पात्रानुकूल और सहज-सरल भाषा

हिंदी कहानी, अब तक कई पड़ाओ एवं कई चुनौतियों से गुजर कर समकालीन समय तक पहुंची है। डॉ. संजय गडपायले कहते हैं कि," स्वाधीनता के पश्चात हिंदी कहानी के शिल्प और भाषा के क्षेत्र में अनेक प्रयोग हुए। इन्हीं प्रयोगों के कारण हिंदी में भिन्न-भिन्न नामों से कहानी के अनेक आंदोलन चल पड़े।"[1] जिस वजह से कई हिंदी आंदोलनों की शुरुआत हुई। जैसे:- नई कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, सहज कहानी, समानान्तर कहानी आन्दोलन, सक्रिय कहानी, जनवादी कहानी, समकालीन कहानी आदि। इन आंदोलनों में निहित समकालीन कहानी वर्तमान समय को केंद्र में रखते हुए अपना विकास करती हैं। जिसमें किसी विचारधारा विशेष का आग्रह है और ना ही शिल्प विशेष का, इसलिए समकालीन कहानीकार कहानी में कथ्य और शिल्प में बहुत अधिक प्रयोग करते हैं। 'भारतेंदु युग' को कहानी, निबंध, नाटक का रचना काल माना जाता है। कहानियों का असली विकास आलोच्य युग में माना जाता है। जब (1900) सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही हिंदी कहानी का जन्म हुआ। जिस पत्रिका में प्रेमचंद, सुदर्शन जैसे कई

कहानीकारों की कहानियाँ प्रकाशित हुई। जिनकी कहानियों का प्रभाव भीष्म सहनी के कहानियों पर भी पड़ा। जिस प्रकार से प्रेमचन्द अपनी गोदान,ग़बन, पूस की रात जैसी रचनाएं समाज को केंद्र बिंदु बनाकर लिखते हैं, उसी प्रकार भीष्म साहनी ने भी समाज को अपना मुख्य विषय बना रखा है। जिसके संबंध में प्रताप ठाकुर लिखते हैं कि,"भीष्म साहनी हिन्दी कथा की प्रगतिशील परम्परा के शक्तिशाली हस्ताक्षर हैं। इनके कथा-मानस पर प्रेमचन्द और यशपाल की गहरी छाप है। परिवेश की समग्रता में वस्तु और पात्र के अन्तर्सम्बन्धों को किस तरह खोला जाए तथा इन सम्बन्धों में जनता के मुक्ति-कामी संघर्षों को कैसे प्रतिपादित किया जाय, यह शिल्प भीष्मजी को प्रेमचन्द के निकट पहुँचा देता है। यद्यपि भीष्म साहनी ने प्रेमचन्द की ग्रामीण वस्तु को नहीं पकड़ा फिर भी, उनका मुहावरा प्रेमचन्द से मिलता-जुलता है। वास्तु-परिप्रेक्ष्य और घटना-दृष्टांतों की दृष्टि से भीष्म साहनी यशपाल के निकट दिखाई देते हैं।"[2] भीष्म साहनी ने एक विशिष्ट भाषा शैली को अपनाया है, और वह निम्नलिखित हैं:-

खुद की भाषा की सादगी और स्पष्ट विषय के कारण भीष्म साहनी बहुत प्रचलित कहानीकार बन चुके हैं। उनको हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत, पंजाबी, रुसी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त था। उन्होंने हमेशा अपने

साहित्य में मानवीय मूल्य, संवेदना, करुणा, नैतिकता को शामिल किया है। इसी के साथ, आम बोलचाल, वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक जैसी अनेक शैलियों का उपयोग कर सामान्य जनता तक अपने रचनाओं के यथार्थ को पहुचाया है। उन्होंने, कहानी में स्थित समस्या, दृश्य, घटना, विचारों को ज्यादा महत्व दिया है। ग्रामीण और शहरी दोनों परिवेशों को कहानी में दर्शाते हुए, उसके अनुकुल पात्रों की भाषा तथा व्यवहार को चित्रित किया गया। जैसे नौकर नम्रतापूर्वक बात करता है, मजदूर लाचारी, गरीबी से त्रस्त, पूंजी पतियों के अधीन रहने में ही खुद का हीत समझता है, घर-बेघर की पागल औरत पागलों की तरह बच्चे उठाने का काम करती है, तमगा कहानी में फौजी के परिवार की चिंता जनक स्थिति, जिन में विषय, समस्या, दृश्य के अनुकुल पात्रों की भाषा को रखा गया है। कहानियों में एक तरफ़ निम्न वर्ग की यातना, उनका संघर्ष, गरीबी के कारण उनके जीवन में तनाव, असंतुष्टि, त्याग, दु:ख को दर्शाया गया है तो दुसरी तरफ़ उच्च वर्ग का बडप्पन, झुठा शिष्टाचार, निर्दयता, अन्याय, खोखलापन दर्शाया गया है। उनके कहानियों की भाषा इतनी सहज- सरल, साधारण है कि कहानी को पढ़ते वक्त ऐसा महसूस होता है कि, कहानी पढ़ी नहीं, तो उसकी वास्तविकता को जिया जा रहा हो। कहानी के दृश्य और पात्र जीवित हो उठे हो। भीष्म साहनी ने विभाजन की त्रासदी को

देखा और झेला भी है। उसीका एक अलग रूप 'गंगो का जाया' कहानी में चित्रित किया गया है। जहा, माँ-बाप का अपने बेटे से दूर होने के दृश्य को दर्शाया गया है। जिसमें तीन पात्र है:- गंगा, घीसू और रीसा। आर्थिक समस्या के चलते अपने परिवार के महत्वपूर्ण हिस्से, अपने बेच्चे रिसा को बाजार में खो देने के दुख का सामना उन्हें करना पड़ता है। इस कहानी में लेखक ने 'दिल्ली' शहर के शहरीकरण को कैंद्र में रखकर विस्थापन की त्रासदी को चित्रित किया है।

यह वास्तविकता भी उन्हें समाज के यथार्थ से ही प्राप्त हुइ है। किसी कहानी या रचना को तभी सफल माना जा सकता है, जब लेखक ने लिखते वक्त जिन भावनाओं को लेकर लिखा है, उन विचारों/भावों को पाठक भी पाठक भी महसूस करे, समझ जाए।

4.2) भीष्म साहनी की कहानियों में विभिन्न भाषाओं का समावेश

भाषा से ही साहित्य में विविधता है। अलग-अलग क्षेत्र के लेखक अपनी भाषा के द्वारा ही खुद के लिखित साहित्य को स्पष्ट रूप से उत्कृष्ट बना पाते है। भाषा ही साहित्य और वार्तालाप का प्राण तत्व है। भाषा का कोशगत अर्थ इस प्रकार सें है- “हमारी भावनाएं भाषा के माध्म से व्यक्त होती हैं। भाषा ही मनुष्य को अन्य सभी प्राणियों से अलग करती है।

हालाकंकि पशु-पक्षी भी एक-दूसरे तक अपना संदेश पहुंचा सकते है, मूक-बधिर अपनी बात कह सकते हैं, पर उनकेसंप्रेषण के माध्यम सीमित और मनुष्य द्वारा बोली जाने वाली भाषा से बहुत भिन्न हैं।“ [3]

तद्भव:- आसमान, बादल, माथा।

बोली भाषा/देशज शब्द:- ओले, सिंघी, हाड़, ताड़ना, उसूल, अरज, सिरफ़, जलूस, बप्पु, गिरत्सी, तनिक, जाइयो, देस, परदेस, मालकिन, सिरीनगर, सरमाना, टाँग, आवें, कनपटि, सन्नाटा, चारपाई, भूखों, माई-बाप, मालिका नजऱ रखी, नजऱ रखी महाराज।

उर्दु शब्द:- सलामती, इंतजार, शक्ल, ज़मीन, अनाज, आखिरी, निश्चय, दृश्य, बेशक, चिलम, दफा, मुजरिम, नामुराद, जेब, तस्वीर, अक्सर, दफ्तर, बेसुध, इश्क, वाकिफ, पसीना, जंग, बरखास्त, मजमून आदि। उसी के साथ उर्दू शब्दों को पक्ति के रूप में भी कहानी में पेश किया गया। वह है:- "आज रोज मोरखा-फिदवी नंबरदार दीदारसिंह बमैह दो पंचो के बयान करते हैं कि बिशनसिंह वल्दे सुखासिंह मरहूम, बाप की मौत के बाद नीमपागल हो गया है। हम इल्तजा करते हैं कि इसे जालंधर शहर के पागलखाने में दाखिल कर लिया जावे। इसका कोई वली-वारस नहीं। गाँव में इसका रहना खतरनाक है-!"

संस्कृत शब्द:- तीव्र, रुद्र, गृहस्त, सौम्य, धैर्य, कृतज्ञता, उँगलियाँ, ग्राहक, पुण्य, पृथ्वी, उच्छ्वास, शगुन, शुन्य, गायत्री, वरदान, फेकना, आश्रय, आकस्मात, नमाज़, बलिया, लंगर, सज्जन, स्वर्ण, आवेश, निधि, प्रार्थना, याचक, तुच्छ, द्वार, नमस्कार, प्रार्थी, हड्डी, हाथ, जननी, पुलकित, असंभव, वीघ्न, तंद्रा, शुभ, गाली, तेज़, षड्यंत्र, संस्कार, कुशल-क्षेम, पिशाच, आत्मा, सहस्र, पुण्य पुलकित, बलि, क्षोभ, स्थान, जेठ, आँख।

पुनरुक्ति युक्त शब्द:- छोटे-छोटे, करते-करते, चूर-चूर, धीरे-धीरे, टप-टप, कहीं-कहीं, लेटे-लेटे, धीमा-धीमा, चप्पे-चप्पे, पहुँचते- पहुँचते, जगह-जगह, नए-नए, गोल- गोल, मोटे- मोटे, धन्य- धन्य, घूँटे- घूँटे, हाय- हाय, ज्यों- ज्यों, कहीं- कहीं, झिक- झिक, अभी- अभी, बैठा- बैठा, दुबले- दुबले, कुछ- कुछ, होते- होते, सोचते- सोचते, गोल- गोल, ऊँचा- ऊँचा, छोटे-छोटे, हलकी- हलकी, चीं- चीं, किन- किन, दौड़ी- दौड़ी, अपने- अपने, एक- एक, कभी- कभी, किसी- किसी, चिख- चिख, चलते- चलते, तरह-तरह, क्या- क्या।

संयुक्त शब्द:- अलग-थलग, हँसने-बोलने, पति-पत्नी, हँसते-खेलते, ऐरे-गैरे, इर्द-गीर्द, ढूँढे-पुछे, यहाँ-कहाँ, लड़ने- मरने, स्मृति-चिन्ह, इधर-उधर, टूटी-

फूटी, सच-झूठ, काले-गोरे, दुबले-मोटे, गरीब-अमीर, सत्तारह-अठारह, एक-दूसरे, खाने-पीने, दाएँ-बाएँ, दस-बारह, खरीद-फरोख्त, हँसी-मज़ाक, रंग-ढंग, तेरह-चौदह, चहल-पहल, हम-तुम, इधर-उधर, कहे-सुने, थका-हारा, उठते-बैठते, ऊल-जलूल, वली-वारस, समझाया-बुझाया, चर्र्-मर्र्।

अंग्रेजी शब्द:-

भीष्म साहनी उस समय से संबंध रखते हैं जब, अंग्रेजों का राज था, स्वतंत्रता की आशा में आंदोलन करना जारी था। अंग्रेजों द्वारा लोगों पर अत्याचार करना, लोगों को खुद की संस्कृति अपनाने के लिए बाध्य करना, उनकी आदत थी। उन्होंने अपने साथ लायी उनकी 'अंग्रेजी' भाषा का भी प्रचार हुआ। इसी समय में भीष्म साहनी का जीवन बीता। उन्होंने अंग्रेजी की शिक्षा ली, अंग्रेजी सीहित्य मे एम.ए की उपाधि हासिल की, विभाजन के बाद जाकिर हुसैन कालेज के अंग्रेजी भाषा के अध्यापक भी रहे। जिसका प्रभाव उनके साहित्य पर दिखाई देता है। उनकी कहानियों में कई अग्रेजी शब्द संकलित है, जैसे:- स्टेज, डिप्टी कमिश्नर, पार्ट, स्कूल, बटन, कांस्टेबल, जोंक, मोटर, वर्कशाप, पालिश, ब्रुश, बुटपालिस, रजिस्टर, वास्कट, प्रिंसिपल, स्टाप रायटिंग, स्टूल, फाउंटेन, क्लास, लाइन, कॉलिज, प्रोफेसर, मिनट,प्लेटफार्म, सुपरिंटेंडेंट, हाल, पेपर, सिगरेट,

क्लीनर, सीजन, हारमोनियम, सिगरेट, प्लेट, टिफनकैरियर, थर्मस, आउट, स्वैटर, क्रिकेट मैच, बाल, बाउलर, लॉसन, बाऊंड्री, टीम, ग्राऊंड, गेट, कैंप, पेंशन, गवर्नर, डिप्टी कमिश्नर, मनीआर्डर, डायरी, ट्रंक, सिल्क, बटन, मोटर, पैंसिल। यह ऐसे शब्द है, जिनका प्रयोग, पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़ दोनो द्वारा यह प्रयोग में लाए जाते है।

मुहावरे:- काठ मार जाना- आश्चर्यचकित होना।, चेहरा पीला पड़ जाना- उदास हो जाना।, इज्जत मिट्टी में मिल जाना:-जब किसी व्यक्ति को किसी चीज का घमंड हो जाता है और वही घमंड एक दिन टूट जाए।, नाक में दम कर देना- परेशान कर देना, मिट्टी छानते रह जाना- नष्ट या बरबाद हो जाना।, उल्टे पांव वापस चले जाना- कहीं पहुचँते ही वहाँ से पूर्व स्थान पर लौट आने के लिए निकलना।, शून्य में देखना:- गौर से देखना।, हाथ साफ़ करना-कोई वस्तु चुराना।, होठ काटकर रह जाना- गुस्सा मन में दबाए रह जाना।, मुंह लटकना-दखी होना।, ठंडे पड़ जाना- ठिठुर जाना।, खाक छानना-भटकना।, बिलख-बिलख कर रोना-जोर- जोर से रोना।, चेहरा तमतमाजाना-क्रोध आना।, माथा ठनकना-गुस्सा आना।, दिल तड़प उठना-बेचैन हो जाना।, नाम की माला जपना-एक ही इंसान को बार-बार याद करना।, चेहरा लाल हो उठना-लज्जित हो जाना।

अरबी:- बेशक़, लौंडा, हुज़ूर, औरत, कसम, कालीन, मालिक, सौदा, नज़र, काग़ज, तलब, लौंडा, माफ, साहब, कुर्सी, हज़ूर, तावीज़, तमाशा, ईमान, अल्लाह, सफ़र, औलाद, मुहल्ला, हुज़ूर, ब्याह, अखबार, अजीब, मुमकिन, ढूंढना, असीम, मालिक।

भीष्म साहनी के पास फारसी भाषा का भी ज्ञान था। जिसके संदर्भ में डॉ. संजय गडपायले लिखते है कि," भीष्म जी का बचपन बँटवारे के पुर्व के गाँव में बीता जो अब पाकिस्तान में है। उस गाँव में भी अरबी-फारसी के कई जानकार थे।"[4]

फारसी शब्द जैसे:- पेश, आवाज, बाबू, घड़ी, निगरानी, सिफारिश, तमाशाइ, मजदूर, तंदूरूस्त, अस्पतास, वाह, पर्दा, अफसर, नाखून, तनख्वाह, अफसोस, दहलीज़, सिफारिश, जनाफ़, बाग़, आवाज़, मुर्दा, दीवार, ज़मीन, आसमान आदि।

अपशब्द:- साले, हरामजा़दे, हरामखोर, बकवास, साला, उल्लू के पट्ठे, मक्कार, गलीज़, लंपट, सत्यानाश, तेरे बाप का मकान बन रहा है आदि।

कहाँवत:- मुह घुम जाना।

4.3) भीष्म साहनी की कहानियों में निहित शैलियाँ

भीष्म साहनी के 'भाग्य-रेखा' कहानी संग्रह की कहानियों में अलग-अलग शैलियाँ निहित है जैसे:- व्यंग्यात्मक शैली, संवादात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, मैं शैली अर्थात आत्मकथात्मक शैली आदि।

हर रचना के साथ **प्रतीक** भी शामिल है। जैसे:- 'मुर्गी की कीमत' कहानी में 'मुर्गी' निम्न वर्ग के दु:ख-दर्द का प्रतीक है, 'तमगे' कहानी में तमग़ा दिखावे का प्रतीक है। जिनके माध्यम से पत्रों के मन की स्थिति को स्पष्ट तह व्यक्त किया गया है।

1) व्यंग्यात्मक शैली

'नीली आँखें' कहानी में समाज के बेफिजूल बातों पर व्यंग्य किया गया है, तो 'मुर्गी की कीमत' कहानी में चुंगी वालों पर यानी कि सरकारी कर्मचारियों के अहिंसा पूर्वक व्यवहार को दिखा कर उन पर व्यंग्य किया गया है। उदाहरण:- मुर्गी की किमत कहानी में अहमदू कहता है कि," उसकी नज़रों में वह एक साधारण इंसान नहीं बल्कि एक विशालकाय दैत्य था। अहमदू के हाथ काँप रहे थे, और इन्हें वह लोई के अंदर डालकर बार- बार अपनी तसल्ली करता था कि कहीं मुर्गी के कुडंकुडांने की संभावना तो नहीं।"[5] अर्थात सरकारी अफसरों के प्रति लोगों के डर के

पीछे, उनकी क्रुरता को दिखाया गया है। उसी के साथ 'तमग़े' कहानी में अंग्रेज सरकार के झूठे दिखावे पर व्यंग्यात्मकता प्रकट की गई है। अर्थात इस कहानी में स्पष्टतः यह दिखाया गया है कि, जंग में अंग्रेज सरकार की जान बचाने वाले, उनके लिए जंग में लड़कर अपाहिज हुए,फौजियों को सिर्फ तमगे देकर रवाना किया जा रहा था। बिना उन्हें कोई सहायता प्रदान किए। सिर्फ दिखावे के लिए तमग़े बाटे जा रहे थे। आधुनिक समय के कुरूप रूप को दिखाने के लिए, उन्होंने इस शैली का प्रयोग किया है।

2) संवादात्मक शैली

ज्यादातर कहानियों में संवादों का प्रयोग किया गया है। जिस कारण पाठक को वह रचना मनोरंजक प्रतीत होती है, ना कि उससे ऊब महसूस होगी। संवादों की सहज- सरल, बोलचाल की भाषा के कारण रचना और आकर्षित बनती है। भीष्म साहनी जितना महत्व विचार पक्ष को देते हैं उतना ही महत्व कला पक्ष को भी देते हैं और भाषा शैली कहानी के विचार पक्ष से संबंधित है।

उदा:- 'अशांत रूहें' कहानी में से संवाद इस प्रकार से हैं कि,"मैं तो आपको अच्छी तरह जानता हूँ, आप हैं न?'

'जी हाँ।'

थोड़ी देर फिर चुप। अब मैंने देखा कि वह भी आराम से बैठ गया है, लेकिन आँखें उसकी अब भी मुझे देख रही थीं।

'एक बात आपसे पूछूँ?'

'कहिए' मैंने जवाब दिया।

मैंने मुड़कर उसकी और देखा तो उसने फिर पूछा, 'क्या आप दयानतदार है?'

'यह आप क्यों पूछते हैं?" [6]

3) विवरणात्मक शैली

हर विवरण में वास्तविकता झलकती हैं। अर्थात पाठक जब उन विवरणों को पढ़ता है, तब अपने आप ही उसके आंखों के सामने वह दृश्य उत्पन्न हो जाते हैं। जिस कारण वह उन विवरणों,दृश्यों के पीछे के यथार्थ को समझ पाता है। 'भाग्य-रेखा' कहानी संग्रह की हर कहानी में अलग-अलग तरह के विवरण मिलते हैं। जैसे:-

'जोत' कहानी में गाँव के त्योंहार का विवरण इस प्रकार से दिया है कि,

उदा:- "गाँव के खेत कट चुके थे और लोग मटोर-मेले की तैयारियों में थे। कांगड़े के हर गाँववाले के लिए मटोर-मेला एक लंबे सफर के बाद

अपने चिर-वांछित स्थान पर पहुँच जाने के बराबर था। खेत कट जाते और 'हाड़' महीने के पहले दिन, गाँव के लोग, नरसिंघो और नगारों को बजाते हुए, गाँव के देवता की पालकी उठाए हुए, कई पहाड़ियाँ पारर करके मटोर गाँव की ओर जाते, जहाँ अनाज के बड़े देवता का मंदिर था। दिन भर देवता की पूजा होती, और मंदिर के फर्श पर चढ़ावे के गेहूँ का एक बिछौना-सा बिछ जाता। फिर रंगरलियाँ होतीं, लुगड़ी के नशे में किसान झूमते हुए घरों को लौटते और अपने इष्ट देवता को फिर से मंदिर में स्थापित कर देते। पर जानकू इस मेले पर हमेशा हाँफ्ता हुआ हीं पहुँचता था।" [7]

4) वर्णनात्मक शैली

भीष्म साहनी के कहानियों में व्यक्ति, स्थान, दृश्य, वस्तु को लेकर कई वर्णन प्रस्तुत किए गए हैं। जिस कारण कहानी को एक सार्थक दिशा प्रदान होती है। उदा:- " दो कीसान थें, मटमैले गाढ़े के कपड़े पहने हुए, और दोनों थके हुए जान पड़ते थें। पिछला आदमी देह का चौड़ा और बलिष्ठ था, उम्र में तीस-बत्तीस बरस का होगा, मोटे-मोटे हाथ, मोटी गरदन और मोटी गठीली टोंगें। अगला उम्र में कम, लड़का-सा था, देह छरहरी और दुर्बल। उसका चेहरा ढलती धूप की तरह पीला हो रहा था,

जैसे बीमार हो। लड़के के दोनों हाथ एक रस्सी से बंधे थे, जिसका दूसरा छोर पिछले आदमी के हाथ में था। किसी-किसी समय, चलते हुए, अगला आदमी रुक जाता, जिस पर पिछला आदमी लातों और घूँसों से उसे पीटने लगता, और रस्सी से सींचता हुआ उसे आगे चलाने लगता। एक किसान दूसरे किसान को हाँके लिए जा रहा था।"[8] जैसे:- 'जोत' कहानी में मुख्य किरदार जानकु के खेत के स्थान का वर्णन।

5) पूर्व दीप्ति शैली

'जोत' कहानी में निहित पूर्व दीप्ति शैली का उदाहरण इस प्रकार से है कि,"उसे ऐसा जान पड़ा जैसे फिर उत्तमी का छोटा- सा सलोना हाथ उसके दिल को छूने लगा है, और उसके कंधे पर अपना सिर रखे उत्तमी कह रही है- 'ले लो ना यह जमीन। मैं जो अब आ गई हूँ। मैं सब काम करुँगी।' और जानकू ने उसका हाथ सहलाते हुए कहा- यह ज़मीन के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े हैं उत्तमी, काम करते-करते हड्डियाँ टूट जाएँगी।'मैं तीन घडे पानी के उठाकर पहाड़ी पर चढ़ सकती हूँ। मैं सब काम कर लूँगी! 'और फिर धीरे से जानकू के सीने के साथ सटकर हँसती हुई, और अपनी चमकती हुई आँखों से उसे आवाक् करती हुई बोली,' यहाँ हमें कोई देखगा भी नहीं, जब चाहेंगे काम करेंगे , जब चाहेंगे बैठकर बातें करेंगे।

यहाँ तो गाँव के आदमी आते ही नहीं। तू कोठा बेचकर ज़मीन खरीद ले!" [9] उनकी कहानियों मे इस शैली का प्रयोग ज्यादा नहीं किया गया हैं। लेकिन फिर भी यह शैली कहानी में एक जान भर देने का काम करती है।

6) (मैं) आत्मकथात्मक शैली

भीष्म साहनी ने 'अशांत रूहें, भाग्य-रेखा, तमग़े जैसी कहानियों मे वह खुद को कथा बताने वाले, खुद एक पात्र के रूप में शामिल होकर कहानियों को सार्थकता की ओर ले गए है। ‘भाग्य-रेखा’ कहानी संग्रह की ‘ऊब’ कहानी प्रथम पुरूष के दृष्टीकोण से लिखि कहानी है।

नाटकीय शैली को भी उनके कहानियों में देखा जा सकता है। उदाहरण: - 'अनोखी हड्डी' कहानी में काल्पनिकता को अपनाते हुए राजा और प्रजा के बीच के द्वंद को दिखाया गया है।

<u>संदर्भ:-</u>

1) गडपायले डॉ. संजय, भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संबंध, शुभम् पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण: - 2011, पृष्ठ क्र.269

2) सक्सेना राजेश्वर, ठाकुर प्रताप, भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना, वाणी प्रकाशन, 1982, पृष्ठ क्र: -2

3) शंभुनाथ, हिंदी साहित्य ज्ञानकोश, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करणः- 2019, पृष्ठ क्र: -2609

4) गडपायले डॉ. संजय, भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संबंध, शुभम् पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण: - 2011, पृष्ठ क्र: - 282

5) साहनी भीष्म, भाग्य-रेखा, प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली, पहला संस्करण: 1953, पहला राजकमल संस्करण: 1997 पृष्ठ क्रः- 62

6) वही पृष्ठ क्रः- 24

7)वही पृष्ठ क्रः - 9

8)वही पृष्ठ क्रः - 105

9) वही पृष्ठ क्र: - 10

उपसंहार

हिंदी साहित्य के महान साहित्यकार भीष्म साहनी, जिन्होंने अपने अनुभवों के यथार्थ को हमेशा अपनी रचनाओं में पिरोया है, जिन में सामाजिक समस्याओं का चित्रण करने, मानव-मन का विश्लेषण करने की एक प्रतिभा विद्यमान है। उनके 'भाग्य-रेखा' कहानी संग्रह के ज्यादातर कहानियों में मानवीय मूल्यों का विघटन होते दिखाया गया है। उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग द्वारा, निम्न वर्ग के लोगों का शोषण, अपमान होता दिखाया गया है। सामाजिक संरचना में अवमूल्यन होने के कारण लोगों की सोच में बदलाव हो चुका है। जिसके परिणाम स्वरूप जरूरतमंद निम्न वर्ग को लेकर, उच्च वर्ग के लोगों ने खुद का नजरिया ही बदल दिया है। संसार में हर जगह चोरी चकारी, बेईमानी इतनी बढ़ गई है कि, कई वर्ष ईमानदार रहे व्यक्ति को भी शक की नजर से देखा जाता है। उसके संबंधित मन में अनेक अनुचित, बेफिजूल धारणाएं निर्माण की जाती है। भीष्म साहनी के कहानियों में 'मानवीय मूल्य' केंद्रीय विषय रहा है। बदलते हुए समय के साथ पूराने मूल्यों में परिवर्तन आ जाता है। कुछ पूराने मूल्य टूटते हैं। जिस कारण सामाजिक ढांचा बिगड़ने लगता है। मूल्यों के विघटन की स्थिति यह प्रमाणित करने की कोशिश करती है कि मूल्यों के सिवा मनुष्य के जीवन के साथ साहित्य

भी निरर्थक है। भीष्म साहनी की कहानियों में कई मूल्यों की बात की गई है। जैसे अहिंसा, प्रेम, ममता, ईमानदारी, सेवा भाव, सत्य निष्ठा, जिम्मेदारी, निष्पक्षता, न्याय आदि।

समय कोई भी हो पर मनुष्य में अवमूल्य नहीं तो मूल्यों का होना बहुत महत्वपूर्ण है। इसका प्रमाण उन्होंने अपने साहित्य द्वारा दिया है। व्यक्ति के भाव, उसके मूल्य ही उसको अन्य प्राणियों से अलग बनाते हैं। जहाँ मनुष्य अपने मूल्यों के हिसाब से बर्ताव करते हैं तो, प्राणी स्थिति के अनुकूल, यही मानव और प्राणी में अंतर है। मनुष्य जन्मजात, परंपरागत तौर पर भाषा, संस्कृति, परिवार/समाज से प्राप्त होती है। उसी के साथ वह खुद भी नई संस्कृति का निर्माण करता है, लेकिन प्राणी के जीवन में भाषा, संस्कृति के लिए कोई स्थान नहीं होता। हर समय में ममता, अहिंसा, न्याय, प्रेम, ईमानदारी, धैर्य, मानवता, सत्य जैसे मूल्य जीवित रहेंगे। लेकिन इन मूल्यों के टूटने से समाज में अन्याय, हिंसा, असत्य, बेईमानी, लालच, कायरता जैसे अवमूल्यों का भी निर्माण होगा। सिर्फ लोगों पर उनका प्रभाव कम ज्यादा दिखाई देता है क्योंकि हर कोई अपनी समझ के हिसाब से मूल्य का चयन करता और उनका आदर पूर्वक पालन करता है। अपने अच्छे मूल्य द्वारा ही मनुष्य अपने जीवन में विकास कर आगे बढ़कर सफलता प्राप्त करता है। उसमें निहित

मूल्य,भाव उसे अपने आसपास के लोगों, समाज, अपने माँ-बाप से प्राप्त होते हैं। फिर उस पर निर्भर होता है कि वह किन मूल्यों का चयन करना चाहता है। मूल्यों से ही उसकी पहचान बनती है जिससे वह जाना जाता है। अवमूल्यों के होने से मनुष्य को समाज से कटुता ही प्राप्त होती है। जिसका जिम्मेदार वह खुद होता है। उसमें निहित संस्कारों, भावों को किसी और द्वारा निर्मित नहीं किया जा सकता क्योंकि वह खुद के मूल्यों का खुद ही निर्माण करता है। जिन मूल्यों को उसने अपनी सुविधा के अनुसार बनाया है।

उनकी कहानियों में समाज के यथार्थ की वास्तविकता के साथ काल्पनिक परिदृश्य भी शामिल है। जिसमें कुछ मूल्यों में परिवर्तित होने के कारण उत्पन्न स्थिति और हर कहानी में मानवीय व्यवहार को लेकर एक सीख दी गई है। मूल्य के द्वारा ही मनुष्य समाज में अच्छा व्यक्तित्व निर्माण कर पाता है। अवमूल्यों के साथ वह एक पशु की तरह होगा। किसी व्यक्ति ने कितनी भी शिक्षा ग्रहण क्यों ना की हो, पर अवमूल्यों के साथ वह किसी काम की नहीं होगी। समाज में लोगों की मानसिकता में विकास आ गया है। बेईमानी, अविश्वासू लोग समाज में इतने हो गए हैं कि किस पर विश्वास रखा जाए और किस पर नहीं यही व्यक्ति को समझ में नहीं आ रहा है। जिस वजह से ना तो वह दूसरों

पर विश्वास रखते हैं और ना ही खुद पर। उनके द्वारा यह मानसिकता रखी जाती है कि अगर एक बेईमान निकला तो उसके जैसे अन्य गरीब, लाचार, रोजगार मांगने वाले लोग खोखले शिष्टाचार ही लेकर आए होंगे। पहले सामूहिक परिवार हुआ करते थे, लेकिन आज स्वार्थ, लालच के चलते एकल परिवार देखने मिलते हैं। अर्थात गुणों के विघटन के कारण परिवारों का बिखराव देखने मिल जाता है। समाज में हिंसा बढ़ रही है, लेकिन आज भी ऐसे कुछ पूराने मूल्य जीवित दिखाई देते हैं, जैसे बड़ों का आदर करना, मदद करना, मानवता, ईमानदारी, नैतिकता आदि।

मनुष्य के मूल्य, उसके भाव, व्यवहार, इतने महत्वपूर्ण है कि, उनके विघटित होने पर देश का नाश तक संभव हो सकता है। जितनी भी मानवता बची है उसी पर देश का भविष्य टिका है। भीष्म साहनी अपनी कहानियों के द्वारा पाठक को मानवता का संदेश देना चाहते हैं। आजादी के बाद यह उनका पहला कहानी संग्रह होने के कारण इसमें निहित कुछ कहानियों में विभाजन में अपनों से विघटित होने की भावना दिखाई देती है। भीष्म साहनी कई भाषाओं के जानकार थे। उनकें कहानियों की भाषा सहज-सरल होने के साथ ही उनमें स्थित अनेक भाषाएं, शैलीयाँ, बोलचाल की भाषा, जो आम तौर पर हर किसी द्वारा बोली जाती है, फिर वह पढ़े-लिखे द्वारा हो या अनपढ़। कहानी को रोचक बनाने का

काम करती है। हर कहानी को पढ़ते वक्त ऐसा महसुस होता है कि, उसमें निहित हर दृश्य जिवीत हो उठा हो।

<u>आधार ग्रंथः-</u>

1) साहनी भीष्म, भाग्य-रेखा, प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली, पहला संस्करण: 1953, पहला राजकमल संस्करण: 1997

<u>सहायक ग्रंथ सूंचीः-</u>

1) डॉ. नगेद्र, डॉ.हरदयाल, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण:- 1973

2) बाबर डॉ. सुरेश, भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन , अन्नपूर्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण:- 1997

3) साहनी भीष्म, तमस, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण: - 1973

4) खरे विष्णु, सिनेमा समय, अनन्य प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 2018

5) शर्मा डॉ. मीनाक्षी, भीष्म साहनी के उपन्यास नये मूल्यों की तलाश, विशाल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण:- 2009

6) पोतदार सुरेंद्र डॉ. अलका, साठोत्तरी हिंदी गीतिनाट्यों में जीवम मूल्य, उमेद प्रिंटर्स ॲण्ड पब्लिकेशन नांदेड, प्रथम संस्करण:- 07 जनवरी 2023

7) वसंतराव अशोक डॉ. मर्डे, नौंवे दशक की हिंदी कविता में नैतिक मूल्य, अमन प्रकाशन:- प्रथम संस्करण:- 2008

8) साहनी भीष्म, मय्यादास की माड़ी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1988

9) गडपायले डॉ. संजय, भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संबंध, शुभम् पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण: - 2011

10) सक्सेना राजेश्वर, ठाकुर प्रताप, भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना, वाणी प्रकाशन, 1982

11) भारती धर्मवीर, मानवीय मूल्य और साहित्य, मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी प्राकाशक, प्रथम संस्करण: - 1960.ई

12) राय हरियश, भीष्म साहनी सादगी का सौन्दर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 2020

13) साहनी भीष्म, अपनी बात, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016

14) साहनी भीष्म, मेरे भाई बलराज, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, प्रथम संस्करण: - 1985

15) पटेल कृष्णा, कथाकार भीष्म साहनी, चिन्तन प्रकाशन, प्रथम संस्करण: -2009

16) परीक्षत साहनी, मेरे पिता की यादें: बलराज साहनी, मंजुल पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण: - जुलाई 2021

17) द्विवेदी डॉ. विवेक, भीष्म साहनी: उपन्यास साहित्य, नवोदय सेल्स नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण:- 1998

18) चन्द्र सुरेश, बीसवीं सदी का रामकाव्य और मूल्यबोध, अनंग प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 2002

19) माथुर प्रसाद प्रो. अगम, मेरे विचार, प्रगुन पब्लिकेशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:- 2011

20) शुक्ला डॉ. जूही, साहित्य संगम, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण:- 2016

21) राय डॉ. विनीता, मूल्य और मूल्य-संक्रमण, कौशिक प्रकाशन, इलाहाबाद

21) बाचुळकर डॉ. अशोक, नाटककार भीष्म साहनी, श्रुति पब्लिकेशन्स जयपुर, प्रथम संस्करण: - 2005

22) तायडे प्रा. अशोक ,आँचलिक उपन्यालों में मूल्य विघटन, रोली प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण:- 2015

23) अगरवाल डॉ. प्रज्ञा, गर्ग डॉ. अंकीत, मानव मूल्य एवं पर्यावरण अध्ययन, ठाकुर प्रकाशन, प्रथम संस्करण:- 2022

24) गुरूजी साने, भारतीय संस्कृती, वरदा प्रकाशन प्रा.लि. पुणे, प्रथम संस्करण:- जनवरी 2011, पृष्ठ. क्र-84

25) चौधरी डॉ. रुपाली, गाँधी नेहरू अम्बेडकर, रोली प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2015

26) कोसम्बी धर्मानन्द, भगवान बुध्द जीवन और दर्शन, लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज, प्रथम संस्करण: - 2008

<u>शोध उपाधि हेतु विविध विश्वविद्यालययों से पूर्ण किए गए शोध कार्य:-</u>

1) सिंह सत्य प्रकाश, मार्गदर्शक: - बिजेंद्र सिंह शोध कार्य भीष्म साहनी के कथा साहित्य में वास्तु और शील्प.पी.बी. स.पूर्वांचल विश्वविद्यालय, 2002

2) कुचेकर भारत. स, मार्गदर्शक:- पांडुरंग पाटील, भीष्म साहनी के कथा साहित्य में चित्रित समाज जीवन, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर, 1998

3) सिंह ऐश्वर्या राज लक्ष्मी, मार्गदर्शक: - राय राम कुनवर, भीष्म साहनी व्यक्ति विचार और साहित्य, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, 2007

4) त्रिपाटी कीरन, मार्गदर्शक:- कातारा.आर.डी., भीष्म साहनी की कथा भाषा का अनुशीलन, डॉ. बी.आर.आम्बेडकर विश्वविद्यालय, 2007

5) रवी.पी. मार्गदर्शक:- डॉ.पी.वी.विजयन, भीष्म साहनी का कथा साहित्य: एक अध्ययन, हिंदी विभाग, कोचीन विश्वविद्यालय ऑफ साइंस एंड टेक्नोलोजी, 1990

6) सुकुमार ऋचा, भीष्म साहनी के उपन्यासों का मूल्यपरक विवेचन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च पत्रिका, प्रकाशन: - 1-1-2022, अंक- 8

<u>लघु शोध आलेखः-</u>

1) शेख मियाभाई डॉ, लियाकत, मानवीय मूल्यों की अवधारणा, स्वरूप तथा महत्व, लोकसेवा कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद (महा), 2018

<u>शब्द कोश:-</u>

1) श्रीवास्तव गोपीनाथ, कार्यालय कोश अंग्रेजी-हिंदी, जगदीश भारद्वाज सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: -1989

2) दुबे कुमार अभय, समाज- विज्ञान विश्व कोश खंड-4, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 2013

3) शंभुनाथ, हिंदी साहित्य ज्ञानकोश, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करणः- 2019, पृष्ठ क्र: -2609

4) कुमार अरविंद, समांतर कोश, हिंदी थिसारस, निदशक, निदेशन बुक ट्रस्ट, नेहरू भवन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: - दिसंबर 1996, पृष्ठ क्रः- 356

5) दुबे कुमार अभय, समाज- विज्ञान विश्वकोश खण्ड-4, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 2013, पृष्ठ क्रः- 1485

6) सक्सेना प्रकाश राम, वर्धा हिंदी शब्दकोश, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, दुसरा संस्करण: - 2015, पृष्ठ क्रः- 962

7) शंभुनाथ, हिंदी साहित्य ज्ञानकोष खंड-5, प्रकाशक: - भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, प्रथम संस्करण: - 2019

8) वर्मा बहादुर डॉ. श्याम, प्रभात आधुनिक हिन्दी शब्दकोश, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:- 2014

<u>पत्रिका:-</u>

1) धूमकेतु जयप्रकाश, अभीनव क़दम-32, अंक-32, दिसम्बर 2014- मई 2015

2) हरिनारायण, मानवीय जिजीवीषा का उत्सव मनाने वाले लेखक के लिए दो शब्द, अंक-06, 2003

3) संपादक: - संजय सहाय, संकीर्णतावाद के विरोधी थे भीष्म साहनी, हंस पत्रिका, अक्षर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2, अंक-7 फरवरी 2017

4) संपादक: - संजय सहाय, मानवीय संबंधों की मार्मिक दास्तान, संकीर्णतावाद के विरोधी थे भीष्म साहनी, हंस पत्रिका, अक्षर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2, अंक-3 फरवरी 2018

5) भाटिया जितेन्द्र, मानवीय जिजीविषा का उत्सव मनाने वाले लेखक के लिए दो शष्द, अगस्त 2003

आनलाईन लेख:-

1) तिवारी पूजा, भीष्म साहमी की कहानियों: सृजन और संदर्भ https://www.apnimaati.com/2019/03/blog-post-66.html?m-1

आलेखः-

1) यादव जितेन्द्र, सम्पादकीय: अहिंसा परमो धर्म: अपनी माटी, नवंबर 1, 2021

<u>साक्षात्कारः-</u>

1) साहनी भीष्म, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण: - 1996

2) भीष्म साहनी का साक्षात्कार, प्रसार भारती आर्चीव्ज, https://youtu.be/oFYvcY1yhCK?si_X74e9ovoQephUF3G (ऑनलाईन)

<u>ऑनलाईन डॉक्यूमेंट्रीः-</u>

1) ए डॉक्यूमेंट्री फिल्म, भीष्म साहनी, साहित्य अकादमी, दिल्ली, (साहित्य अकादमी आर्चिव्ज वेबसाइट) नंदन कुध्यादि द्वारा- https://youtu.be/5YjvORz4wYQ?si=Jg3Q08N24SIOoxDB

<u>ऑनलाईन प्रेयरः-</u>

1) https://samatechigani.blogspot.com/2017/03/blog-post_12.html?m=1